ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

जून-२०१५

जून-2015 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 1 ◆ उदयपुर

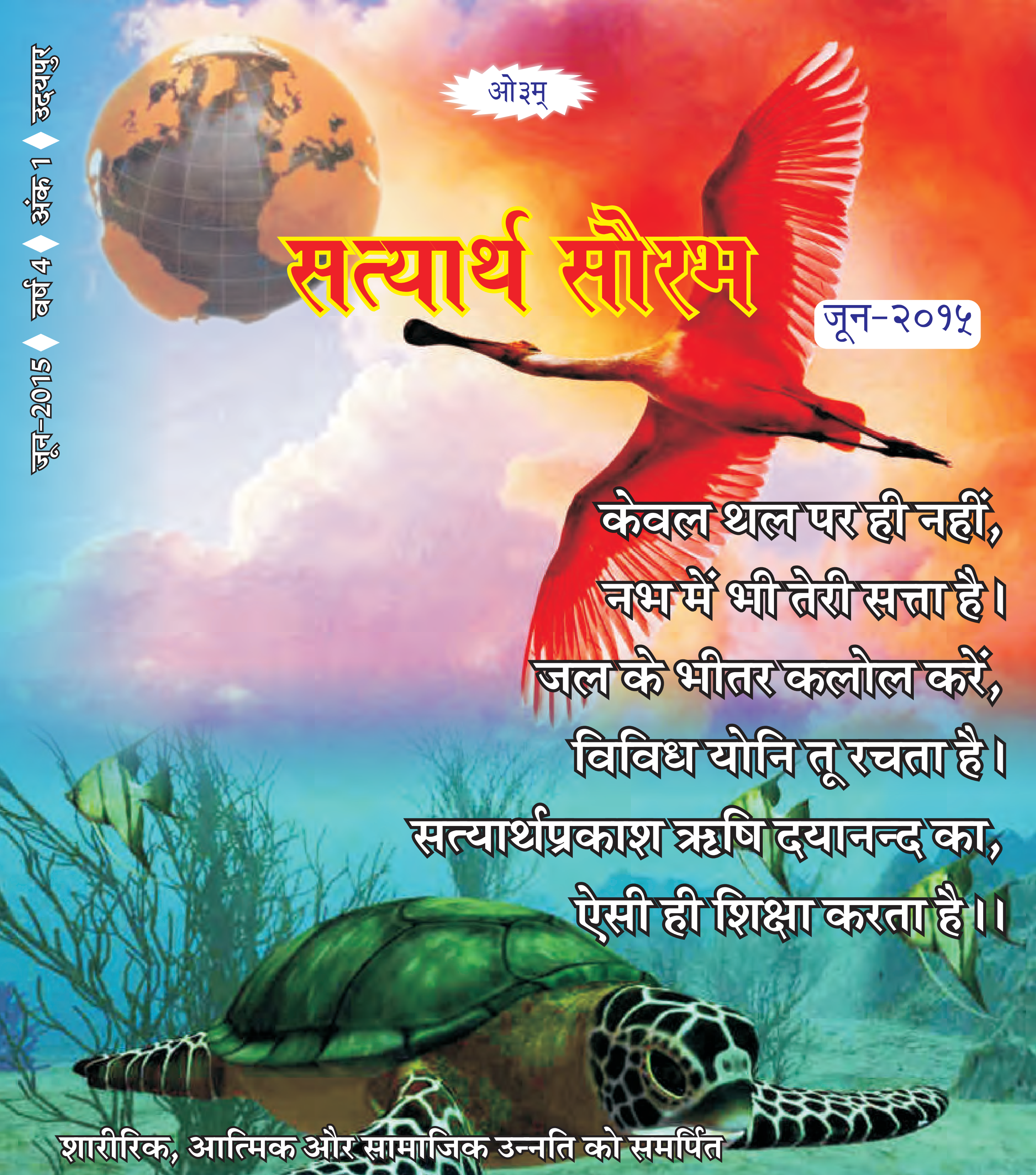

केवल थल पर ही नहीं,
नभ में भी तेरी सत्ता है।
जल के भीतर कलोल करें,
विविध योनि तू रचता है।
सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द का,
ऐसी ही शिक्षा करता है।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ४२

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

१७ क्या "अनुच्छेद ३७०" का समर्थन देशद्रोह नहीं ?

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
प्र. आषाढ कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

June- 2015

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २७

हलचल २८

०६	नो इट्स आल्वेज़ नाट योर च्वाइस
११	मरघट तक जिन्दा है बाजार
१५	सामवेद ने की कन्या की माँग
१८	सत्यार्थप्रकाश पहेली-१७
१९	पण्डित राम प्रसाद 'बिस्मिल'
२०	वो थे पापा
२१	The ancient sound of "OM"
२३	वेदों में इक्ष्वाकुवंश और राम कथा
२४	वैदिक वाङ्मय और विज्ञान
२६	स्वास्थ्य- तिल के लाभ
२९	सत्यार्थ पीयूष- संन्यासाश्रम
३०	कथा सरित- जय मानवता

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - १

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

धरती पर स्वर्ग

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
कीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।।

-ऋग्वेद १०/८५/४२

हे वर और वधू! (इह) यहाँ (एव) ही (स्तम्) रहो, (मा) मत (वियौष्टम्) वियुक्त हो, (विश्वम्) पूर्ण (आयुः) आयु को (व्युश्नुतम्) प्राप्त करो, (स्वे) अपने (गृहे) घर में (पुत्रैः) पुत्रों (नतृभिः) पोतों और नातियों के साथ (मोदमानौ) प्रसन्न होते हुए (क्रीडन्तौ) खेलते हुए (रहो)।

वेदों के आधार पर ऋषियों ने मनुष्य जीवन को चार आश्रमों में बाँटा है। ये चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास के नाम से प्रसिद्ध हैं। मनुष्य के सामान्य जीवन की अवधि को सौ वर्ष निर्धारित करते हुए उसे इन चार आश्रमों में बाँटा गया है। केवल वैदिक धर्म में ही इन चारों आश्रमों का विधान पाया जाता है। संसार के अन्य किसी भी मत-मतान्तर में जीवन का यह वैज्ञानिक वर्गीकरण नहीं पाया जाता। यह वैदिक विचारधारा की महान् विशेषता है। यह जीवन मानो गणित का एक प्रश्न है जिसमें जोड़, घटा, गुणा और भाग चारों का समन्वय पाया जाता है। ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी वीर्य का संग्रह करता है। वह शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों को इकट्ठा करता है। यह मानो उसका संग्रहकाल है। ब्रह्मचारी गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके इन जोड़ी हुई शक्तियों को गृहस्थ के विभिन्न कामों में खर्च करता है। २५ वर्ष तक निरन्तर अपनी शक्तियों को आजीविका, पत्नी, सन्तान, सम्बन्धीजन और गृहस्थ के अन्य कार्यों में खर्च करने के पश्चात् जब गृहस्थ वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता है, तब वह अपनी खर्च की हुयीं शक्तियों को ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, जप एवं तप के द्वारा गुणीभूत करता है। इन शक्तियों को गुणीभूत करते हुए मानो वह एक महान् उद्देश्य की तैयारी करता है। जब तैयारी पूरी हो चुकती है तो वह अपने संग्रहीत ज्ञान, विज्ञान एवं अनुभव को सामाजिकों में बाँटने के लिए कृतसंकल्प हो जाता है। यही उसकी संन्यास आश्रम की दीक्षा का अवसर होता है। यह चतुर्विध आश्रम-व्यवस्था वैदिक धर्म की एक बहुत बड़ी विशेषता है जो संसार में अन्यत्र दुर्लभ है।

ब्रह्मचर्य आश्रम यदि आधार है तो गृहस्थ आश्रम उस आधार पर निर्मित एक सुन्दर भवन है। गृहस्थ आश्रम की अपनी महत्ता, उपयोगिता और उपादेयता है। कुछ जन्मजात वैराग्यवान् व्यक्तियों को छोड़कर सामान्य मनुष्य के जीवन की शोभा

गृहस्थ से है। गृहस्थ को अपनाकर ही मनुष्य जीवन में सौन्दर्य एवं निखार आता है। काम मनुष्य की एक प्रबल प्रवृत्ति है। उसका सुशोभित रूप गृहस्थ में ही प्रकट होता है। यदि गृहस्थ आश्रम का विधान न हो तो काम अपना भयंकर एवं वीभत्स रूप धारण करके समाज के सुन्दर एवं स्वस्थ रूप को कुरूप बना दे। कामदेव को यदि भूषित एवं सुन्दर रूप देनेवाला कोई आश्रम है, तो वह गृहस्थ आश्रम ही है। तनिक कल्पना कीजिए कि गृहस्थ को उड़ा दिया जाए तो क्या कामवासना का पवित्र रूप समाज में रह सकता है? क्या पुरुष और स्त्रियाँ आपस में वैसे ही रतिक्रिया न करते, जैसे कि पशु एवं पक्षी करते हैं? जो जिसके साथ चाहे संभोग कर ले और जितने समय तक सम्बन्ध रखना चाहे रख ले, इससे क्या पशुवत् व्यवहार का प्रदर्शन न होता? क्या इसे मनुष्य जीवन का सुन्दर रूप कहा जा सकता था? कदापि नहीं। क्या इस व्यवस्था में कोई पुरुष किसी स्त्री को अथवा कोई स्त्री किसी पुरुष को पवित्र रूप में देख सकती थी? यह वासनात्मकता संसार को वेश्यालय का रूप दे देती। इस प्रकार कभी भी समाज का सुन्दर रूप स्थिर नहीं रह सकता था और सन्तान कभी माता-पिता को पवित्र दृष्टि से न देख पाती। इस प्रकार के वासनाजन्य एवं मर्यादाहीन वातावरण में उत्पन्न सन्तान क्या पवित्रता की भावना रख सकती थी?

काम पर नियंत्रण करना प्रत्येक मनुष्य के वश की बात नहीं। इसीलिए काम को नियंत्रित करने के लिए गृहस्थ आश्रम की

स्थापना की गई। इस प्रकार एक पुरुष को एक स्त्री के साथ और एक स्त्री को एक पुरुष के साथ बाँध दिया गया। मनु महाराज ने पुरुष के लिए प्रतिबन्ध लगाते हुए कहा-

स्वदारनिरत: सदा। - मनु. ३/४५

अर्थात् पुरुष केवल अपनी ही पत्नी से प्रीति रखने वाला हो।

स्त्री को मर्यादा के तटबन्धों में बाँधते हुए कहा-

उपचर्य: स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पति:। - मनु. ५/१५४

अर्थात् पतिव्रता स्त्री पति की सेवा देवता की भाँति करती रहे। कामवासना को मर्यादित करने के लिए और तटबन्ध लगाये और कहा-

ऋतुकालाभिगामी स्यात्। - मनु. ३/४५ अर्थात् केवल ऋतुकाल में स्त्री का सेवन करे।

यद्यपि इस नियम पर चलने वाले तो अपवाद ही होंगे परन्तु काम को इससे अधिक पवित्र एवं नियंत्रित रूप क्या दिया जा सकता था?

गृहस्थाश्रम मनुष्य में त्याग की भावना लाता है। स्त्री के त्याग का तो कहना ही क्या है! वह तो त्याग की साक्षात् मूर्ति है। उसका त्याग तो असाधारण है। पत्नी का अपूर्व त्याग गृहस्थ के सुख एवं ऐश्वर्य का महान् आधार है। गृहस्थ में प्रवेश करते समय वह माता-पिता का त्याग करती है, भाइयों और बहनों का त्याग करती है और साथ ही उस वातावरण का त्याग करती है जिस वातावरण के अन्दर उसका पालन पोषण हुआ है। क्या इस अपूर्व त्याग का उदाहरण गृहस्थ के अभाव में अन्यत्र दृष्टिगत हो सकता है? कदापि नहीं। त्याग का दूसरा उदाहरण हमें उस समय मिलता है जब विवाह के पहले व्यक्ति केवल अपना ही ध्यान रखता है। बाजार में कोई वस्तु देखता है तो उसे लेकर खा लेता है परन्तु गृहस्थ प्रवेश के पश्चात् ऐसा नहीं करता। जब वह खाने की कोई वस्तु खरीदता है तो वह बाजार में अकेले ही नहीं खा लेता, अपितु उसे ध्यान रहता है कि उसका कोई भागी भी है। जिसके साथ उसे उस वस्तु का सेवन करना है। यह भाव त्याग का सूचक है जो कि गृहस्थ में पुरुष को स्त्री के लिए और स्त्री को पुरुष के लिए अपनाना होता है। जब सन्तान हो जाती है तब माता-पिता सन्तान के लिए त्याग करते हैं। बच्चों की आवश्यकताओं का पहले ध्यान रखते हैं और फिर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। पत्नी यहाँ भी अपूर्व त्याग का परिचय देती है। वह पति और बच्चों को खिलाकर स्वयं खाती है और प्राय: खाद्य पदार्थों का अच्छा और बड़ा भाग उन्हें खिलाकर बचा-खुचा भाग स्वयं खाती है।

गृहस्थ की उपयोगिता इसलिए भी है कि स्त्री और पुरुष इसी आश्रम में आत्म विस्तार करते हैं। पुरुष पुत्र के रूप में और स्त्री पुत्री के रूप में अपने व्यक्तित्व के विस्तार को अनुभव करते हैं। सन्तान के एक एक अंग में वे अपने व्यक्तित्व की छाप देखते हैं। इसे देखकर गृहस्थ जिस अलौकिक आनन्द की अनुभूति करते हैं, उसे वे स्वयं ही जानते हैं।

गृहस्थाश्रम तप और साधना की भावनाओं को अग्रसर करता है। सन्तान के लालन पालन और उसकी शिक्षा दीक्षा में जो तपस्या गृहस्थ को करनी पड़ती है, उसे गृहस्थ ही जानते हैं। गर्भस्थिति के पश्चात् ही माता की तपस्या आरम्भ हो जाती है। ज्यों-ज्यों गर्भ परिपक्वता की ओर बढ़ता है त्यों-त्यों माता की सावधानी बढ़ती चली जाती है। उसके खाने की वस्तुओं पर प्रतिबन्ध लगता चला जाताहै। सन्तानोत्पत्ति पर उसे जो कष्ट सहना पड़ता है, वह भी माता की तपस्या का ही परिचायक है। बच्चा जब कुछ ही दिनों का होता है तो कई बार रात्रि को बच्चे के लिए जागना पड़ता है। निद्रा के आनन्द को नष्ट करना पड़ता है। जागकर आँखों में रात काटनी पड़ती है। जब कभी सन्तान रुग्ण पड़ जाती है तो वह साधना और भी साकार रूप धारण कर लेती है। माता-पिता सन्तान के लालन-पालन एवं निर्माण में जो साधना करते हैं और जो कष्ट उठाते हैं उसे गृहस्थ ही जानते हैं। कठिनाइयों में मानसिक सन्तुलन बनाये रखने और धैर्य धारण करने का सबसे अधिक अभ्यास इसी आश्रम में होता है।

गृहस्थ आश्रम के कारण ही सम्बन्धों की स्थापना होती है। यदि गृहस्थाश्रम न होता तो पारिवारिक सम्बन्धों की स्थापना न हो पाती। दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, फूफा-फूफी, नाना-नानी, मौसा-मौसी, मामा-मामी, श्वसुर-जमाता, सास-बहू, बेटा-बेटी,

भाई-बहिन, पोते-पोती और धेवते-धेवती के रिश्ते गृहस्थाश्रम के ही परिणाम हैं। ये रिश्ते व्यक्ति को जीवन में किस प्रकार शक्ति प्रदान करते हैं, यह प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अनुभव करता है। रिश्तेदारी का क्षेत्र भी मनुष्य के घनिष्टतम सम्बन्धों का सूचक है। यदि वे सम्बन्ध न होते तो मनुष्य अपने आपको अत्यन्त असहाय, निरीह एवं असमर्थ अनुभव करता।

गृहस्थाश्रम को उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिए निर्मित किया गया है। किसी परिवार में जब कभी यज्ञोपवीत, मुण्डन, नामकरण और विवाह आदि संस्कार होते हैं तो स्त्री-पुरुष अपनी प्रसन्नता के भावों को अभिव्यक्त करने के लिए उस परिवार में आते हैं। वे अपनी शुभकामनाएँ उस परिवार को समर्पित करते हैं, तब एक विशेष प्रकार की चहल-पहल, प्रसन्नता और आह्लाद का वातावरण हमें उस परिवार में दृष्टिगोचर होता है, गृहस्थाश्रम के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं संभव नहीं है। इसी प्रकार जब किसी परिवार में कोई दुःखप्रद घटना घटती है तो इष्ट मित्र शोक-संवेदना प्रकट करने के लिए उपस्थित होते हैं। उनकी उपस्थिति और उनके सहानुभूतिपूर्ण वचन उस गहृस्थ के व्यथित हृदय को कितनी शान्ति प्रदान करते हैं, यह वही व्यक्ति जान सकता है जो ऐसी परिस्थिति से गुजरा हो। इस सबके अतिरिक्त हमें बड़ों के प्रति क्या व्यवहार करना है, छोटों के प्रति कैसा बर्ताव करना है, इन सब व्यवहारों का ज्ञान हमें निःसंदेह गृहस्थाश्रम से होता है।

गृहस्थाश्रम नैतिकता का भी अच्छा प्रशिक्षण केन्द्र है। नैतिकता का बहुत कुछ विकास इसी आश्रम के आधार पर आधारित है। अभिवादनशीलता, श्रद्धा-भाव और सेवा-भाव आदि नैतिक नियमों का अभ्यास इसी आश्रम में होता है। जब कोई बड़ा व्यक्ति घर में आता है तो 'नमस्ते' कहकर उनके अभिवादन का अभ्यास माता-पिता बच्चे को कराते हैं। बड़ों के प्रति श्रद्धा और छोटों के प्रति प्रेम का प्रशिक्षण तो इस आश्रम की विशेषता है। माता-पिता की सन्तान के प्रति कर्तव्यपूर्ति इस आश्रम के कारण ही संभव हो सकती है। भाई और बहन का आदर्श प्रेम इसी आश्रम में साकार होता है। बच्चों का लालन-पालन तो परिचारिका गृहों में भी हो सकता है, पर जो स्नेह माता-पिता उस पालन-पोषण में सन्तान को देते हैं वह परिचारिकाएँ नहीं दे सकतीं। बूढ़े माँ-बाप की सेवा वृद्धालयों में भी हो सकती है, सरकारी कर्मचारी उनकी सेवा कर सकते हैं, परन्तु सन्तान ने जिस श्रद्धा-भाव से माँ-बाप की सेवा करनी है, वृद्धालयों के सरकारी कर्मचारी उनकी वैसी सेवा नहीं कर सकते। यही गृहस्थाश्रम का सौन्दर्य है।

क्रमशः ....

– प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

संग्रहालय में उपस्थित तथ्य अति उत्तम एवं आज के भौतिकवादी परिवेश में युवा पीढ़ी के लिए विशेष रूप से मार्गदर्शन हैं।

– पशुपति नाथ

आज उदयपुर ब्रो-कोकोन २०१५ कान्फ्रेंस में सपरिवार आया था। अनायास इस ऐतिहासिक स्मृति के दर्शन का मौका मिला। अत्यन्त सुन्दर प्रयास है। इस स्थल को और अधिक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।

– डॉ. वीरोत्तम तोमर, मेरठ

स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन के बारे में उनके द्वारा रचित महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश और इस भव्य चित्र प्रदर्शनी में अनेक महापुरुषों की जीवन शैली एवं वेद, शास्त्रों के विचार को पढ़कर बहुत अच्छा लग रहा है। यह समाज के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में राह दिखाने का कार्य करेगा। यहाँ लिखे सिद्धान्त समाज और व्यक्ति के जीवन को सुन्दर एवं संस्कारित बनाने में बहुत सहयोग का कार्य करेंगे।

– नथाराम नेहरा, बाडमेर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर

आत्म निवेदन
नो इट्स आल्वेज़ नाट योर च्वाइस

अभी हाल में अभिनेत्री दीपिका पादुकोण द्वारा अभिनीत एक वीडिओ चर्चा में है। चर्चा वीडिओ के कथ्य व उसको सपोर्ट करते दृश्यों को लेकर है। वस्तुतः यह एक विचारधारा है जो अपने शरीर, अपने दिमाग, अपने मन के ऊपर तथा उनके द्वारा असीम, निरंकुश, अबाधित अधिकार के प्रयोग करने के सम्बन्ध में उन्मुक्तता की घोषणा करती है। यौन सन्दर्भ को विशेषरूप से इसका केन्द्रीय बिन्दु बनाया गया है जहाँ सम्पूर्ण यौन स्वतंत्रता की बात कही गयी है। देखा जाय तो यह विचारधारा कुछ नयी नहीं है। यह वही वाममार्गीय विचारधारा है जो कि भारत में, विशेष रूप से पिछले २५०० वर्षों में विभिन्न कालखण्डों में काफी प्रभावशाली रही है। भारतीय साहित्य में ऐसी मानसिकता के व्यापक परिदृश्य दिखायी देते हैं।

महाभारत में एक स्थल पर प्रसंग आता है कि श्वेतकेतु ऋषि के सामने ही जब उनकी माता परपुरुष के साथ जाने लगती है तो उनको बड़ा क्रोध आता है पर श्वेतकेतु के पिता इसे सनातन धर्म बताते हैं। महाभारत के कुछ संस्करणों में प्राप्त यह घटना ऐसी मानसिकता को प्रदर्शित करती है जब नारी की उसी अबाधित स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया है। चार्वाक नामक विचारक ऐसी ही उन्मुक्त प्रणाली को जीवन पद्धति स्वीकार करता है।

यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योर्गोचरः।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

वाममार्गीय मानसिकता इन्द्रिय सुख व मनमाने आचरण को ही मोक्ष प्राप्ति का साधन बताती रही है।

मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च।
एते पञ्च मकाराः स्युर्मोक्षदा ही युगे युगे।।

यहाँ हम एक बात कहना चाहते हैं कि अगर समाज के मूल्यों और उपयोगिता की बात करें तो यह विचारधारा इतिहास में कभी भी अपना औचित्य सिद्ध नहीं कर पायी है।

यह आलेख हम इस विचारधारा के नैतिक पक्ष को लेकर नहीं लिख रहे अतः इसमें अभी सुर्ख़ियों में आये एक और बयान की चर्चा करना चाहेंगे, जिसमें हम क्या खाएँ इसे भी मौलिक अधिकार माना है। सन्दर्भ है महाराष्ट्र सरकार द्वारा गौवंशवध पर रोक लगाना। इनका कहना है कि हम क्या खाएँ- मांस या शाक, मांस में किसका मांस खाएँ। गाय का, सूअर का अथवा अन्य किसी का यह निर्णय करना हमारा निरपेक्ष अबाधित अधिकार है उसमें सरकार या अन्य कोई एजेंसी बाधा नहीं डाल सकती। हम इन दोनों बयानों को व्यक्ति और समाज के मध्य में अधिकारों और कर्तव्यों के सन्दर्भ में हिस्सेदारी की समस्या के रूप में देखते हैं। यह समस्या कोई आज पहली बार नहीं उठी है। इस पर अनेक समाजशास्त्री अपनी राय रख चुके हैं। अनेक प्रकार के वादों का सृजन हो चुका है।

हम सीधे सच्चे रूप से अपनी बात इस आलेख में रखेंगे। सबसे पहले हम कहना चाहते हैं कि आपके शरीर, मन व आत्मा पर आपकी absolute freedom की बात मानी जा सकती है जब यह प्रमाणित हो सके कि इनके निर्माण में किसी अन्य का कोई सहयोग नहीं है। पर मुझे भय है कि यह कभी प्रमाणित नहीं हो सकता। कम से कम आपके माता-पिता की भूमिका आपके निर्माण में जो रही है उसे नकारा नहीं जा सकता। साथ ही वे सभी लोग जो आपके ज्ञानार्जन में सहायक रहे हैं उनके सहयोग को नहीं नकारा जा सकता। अतः उनके प्रति, उनके सम्मान के प्रति आपका दायित्व तभी निर्धारित हो जाता है जब आप गर्भ में आये थे। इसीलिये भारतीय मनीषियों ने इस बात को इस रूप में कहा था 'मातृमान् पितृवान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' स्पष्ट है कि मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में इन तीनों की भूमिका है अतः अधिकारों और कर्तव्यों की विवेचना इनके स्पर्श किये विना नहीं हो सकती।

वस्तुतः मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी इसीलिए कहा है कि उसका जीवन कदम-कदम पर समाज के विना संभव नहीं है। वह समाज के बीच में रहता है। चौबीस घंटों में से आधे से ज्यादा समय वह किसी न किसी के संपर्क में रहता है अतः वह जो कुछ करता है, कहता है चाल-ढाल, भाव-भंगिमा रखता है वह सब न्यूनाधिक अन्य को प्रभावित करता ही है अतः आपका अधिकार निरपेक्ष नहीं हो सकता। हाँ ऐसे वे पल जब आप पूर्णतः अकेले हैं आप अगर चाहें तो पूर्ण स्वतंत्रता ले सकते हैं कि आप क्या पहनें, कम पहनें या ज्यादा पहनें या पहनें भी या न पहनें। जैसा आज के समय में विशेष रूप से बॉलीवुड में ऐसा कहना और करना भी फैशन बन गया है, प्रगतिशीलता और नारी सशक्तिकरण की पहचान माना जा रहा है। किसी अभिनेत्री ने अपने शरीर के एक अंग को उद्धृत करते हुए कहा था यह मेरे अंग हैं, इसे मैं उघाड़ूँ यह मेरी मर्जी है, जिसे देखना हो वह देखे, जिसे न देखना हो वह न देखे। ठीक है, आप यदि किसी बंद स्थल पर यह प्रदर्शन करतीं हैं तो जो देखने जावे वह जाय जो नहीं जाना चाहते, वे न जायँ। परन्तु जब आप परदे पर यह सब दिखाते हैं तो बताइये विपरीत विचार रखने वाला भी कब तक, और कैसे बचेगा? दुर्भाग्य है कि यह सब छोटे परदे पर भी पैर पसार चुका है अतः परिवार जब साथ बैठकर कोई कार्यक्रम देखता है और ऐसे दृश्य आते हैं तो सदस्यगण नज़रें झुकाते हैं अथवा चैनल बदलते नजर आते हैं पर सभी चैनलों पर ऐसे दृश्यों की भरमार है। अतः यहाँ आपकी निरपेक्ष स्वतंत्रता की बात जायज नहीं है। क्योंकि वह अन्यों की रुचि के ऊपर आपकी Choice थोप रही है। यह बात केवल महिलाओं के सन्दर्भ में ही हम नहीं लिख रहे पुरुषों के साथ भी यही बात है क्योंकि अब पुरुष भी बदन उघाड़ू दौड़ में शामिल हो गए हैं। कुल मिलाकर हम निवेदन यह करना चाहते हैं कि ज्योंही एक भी व्यक्ति के आप संपर्क में आते हैं तो आपका यह अधिकार उसकी अनुकूलता-प्रतिकूलता से बाधित होता है।

यहाँ हम विनम्रता के साथ यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि धर्म के नाम पर अथवा किसी साधना की आवश्यकता मानकर अथवा जितेन्द्रियता के प्रदर्शन के निमित्त से अथवा किसी प्रथा के अंतर्गत आप निर्वस्त्र रहना चाहते हैं तो सत्य तो यही है कि आप पूर्ण एकांत में अपनी रुचि अथवा अपने विचार के अनुसार रहें किसी को आपत्ति नहीं है पर जब आप समाज के सदस्यों के बीच आते, उठते-बैठते हैं तो फिर आपको वस्त्र धारण करने ही चाहिए। आप इन्द्रिय-जयी हो सकते हैं, आप काम पर पूर्ण विजय प्राप्त किये हो सकते हैं पर जिनके बीच आप विचरण कर रहे हैं उनके बीच में हर आयु के, हर लिंग के छोटे-बड़े सदस्य हो सकते हैं, जिनपर आपको वस्त्रहीन देखकर अलग-अलग मनोवैज्ञानिक प्रभाव हो सकते हैं और यह भी कि हर समाज में सभ्यता के दायरे में एक सीमा तक ही वस्त्रों के सन्दर्भ में खुलापन स्वीकृत होता है और साधू हो या सामान्य स्त्री-पुरुष जब तक वे समाज के मध्य हैं उन्हें यह ध्यान रखना ही चाहिए। यही उनकी महानता है। हाँ जब वे पूर्ण एकांत मे हों निज स्वीकृत साधना को, अबाधित करें।

यहाँ हम प्रसिद्ध समाज सुधारक महर्षि दयानन्द का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते हैं। वे संन्यासी थे और प्रचलित संन्यास परम्परा के अनुसार कौपीन-मात्र पहनते थे। जब वे कलकत्ता गए तो ब्राह्मसमाज के नेता बाबू केशव चन्द्र सेन ने उन्हें परामर्श दिया कि आप अब समाज के विभिन्न लोगों के वीच वक्तृता के लिए जाते हैं अतः आपको योग्य है कि आप पूर्ण वस्त्र धारण करें। महर्षि ने न तो संन्यास परम्परा की दुहाई दी न कम वस्त्रों को किसी साधना के लिए आवश्यक बताया, तुरन्त केशव बाबू का सुझाव स्वीकार कर लिया तथा आजन्म पूरे वस्त्र पहनते रहे। यह होता है सत्य स्वीकार करना।

कोई व्यक्ति काम को कितना अपने वश में कर लिया है इसके परीक्षण के लिए एकांत में यदि निर्वस्त्र शयन करे तो शायद किसी को आपत्ति नहीं होगी परन्तु अपने प्रयोग में यदि वह किसी अन्य महिला को शामिल करे तो यह नितान्त अनुचित है बाबजूद इसके कि वह व्यक्ति महिला को हाथ भी न लगाए। सम्बंधित महिला किसी भी कारण से इस स्थिति को स्वीकृत कर ले पर इस परिस्थिति का महिला पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा यह भी क्या अंकित करने की बात है?

यहाँ हम कहना चाहेंगे कि समाज में रहते हुए न तो निरपेक्ष असीमित स्वतंत्रता संभव है और न ही व्यक्ति और

समाज दोनों के लिए हितकारी। आप विवाहेतर सम्बन्ध बनाने को अपनी Choice मानते हैं, ठीक है पर यही स्वतंत्रता आपके पार्टनर को भी है, वह भी जब चाहे आपको छोड़ सकता है। पारस्परिक विश्वास, स्नेह, प्रतिज्ञाएँ इन सबका ऐसे में क्या मूल्य होगा? हर क्षण विश्वासघात के साए में जीवन कैसा होगा इसका सहज अंदाज लगाया जा सकता है।

अतः सुनिश्चित है कि अपनी स्वयं की भलाई हेतु भी कतिपय बंधन आवश्यक हैं। आपने नया वाहन लिया है आपकी Choice है कि आप तेज स्पीड में ड्राइव करें। सुनसान स्थान पर, आपकी अपनी हानि न हो इस सीमा तक, आप की Choice चल सकती है परन्तु जहाँ अन्य लोग भी आ जा रहे हों और हम तो कहेंगे लोग ही क्यों पशु भी आ जा रहे हों, वहाँ आपकी Choice नहीं चल सकती। अन्य को कोई चोट न पहुँचे इस सीमा तक इसी उद्देश्य को लेकर बनाए गए ट्रैफिक नियमों की अनुपालना आपको करनी होगी। कल्पना कीजिए किसी चौराहे पर गुजरने वाले वाहन चालक ट्रैफिक सिग्नल्स की परवाह न कर निरपेक्ष स्वतंत्रता को अपना अधिकार मान चलें तो शाम होते-होते मरने वालों और घायलों की कितनी संख्या होगी?

अभी जब यह लेख लिख रहा हूँ घर के बाहर गली में कुछ किशोरवय लड़के क्रिकेट खेल रहे हैं उनका यह कहना है कि यहाँ खेलना उनकी Choice है। तभी एक लड़के ने शॉट मारा गेंद जाकर एक घर के शीशे पर लगी कीमती खूबसूरत शीशा टूट गया यह तो गनीमत रही कि किसी को लगी नहीं पर ऐसी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। क्या ऐसी अबाधित स्वतंत्रता आप देना चाहेंगे। भाई मैदान खेल के लिए हैं, वहाँ जाकर खेलिए। स्पष्ट है आपकी Choice निरपेक्ष नहीं हो सकती। आपकी ऐसी Choice जो अन्यों के लिए हितकारी नहीं है उनके अथवा सभ्य समाज के लिए उपयुक्त नहीं है उसे बंधन सहना ही चाहिए। यहाँ केवल मनुष्यों के हित तक की बात नहीं है वरन् प्राणिमात्र के हित को देखना होगा। ऊपर बीफ खाने का जिक्र किया था। हम यहाँ केवल गौ अथवा गौवंश की बात नहीं करेंगे वरन् प्राणिमात्र की बात करेंगे। आपको अपने स्वाद के लिए किसी को भी मारने का कोई अधिकार नहीं है। स्वाद के लिए ही क्यों किसी भी हेतु से मारने का अधिकार नहीं है।

अगर कोई धर्म या मत पंथ के नाम पर ऐसी हिंसा करता है तो वह धर्म ही नहीं है। मनुष्य ही नहीं प्राणिमात्र को जीने का नैसर्गिक अधिकार है, उसके इस अधिकार को केवल इस कारण से आप छीन नहीं सकते कि वह आपसे कमजोर है। यदि ऐसा है तो इसे जंगल राज कहेंगे। किसी तथाकथित धर्म के नाम पर यदि पशुबलि जायज कही जावेगी तो फिर नरबलि को भी मान्यता प्रदान कीजिए। पशु, पक्षी, मछली आपकी संपत्ति नहीं हैं आपने उन्हें जीवन नहीं दिया है आपको किसी भी दृष्टिकोण से उन्हें मारने का अधिकार नहीं पहुँचता है। अतः किसी भी प्राणी का मांस आप खाते हैं तो उस प्राणी के जीने के अधिकार का हनन होता है अतः यहाँ आपकी Choice बाधित होनी ही चाहिए। एक बात और पशु-पक्षी के मारने से सम्पूर्ण समाज का भी अहित होता है। गाय, बैल, भैंस, भैंसे आदि उपकारक पशुओं की हत्या से तो सीधा-सीधा नुक्सान है पर सामान्य रूप में पशुओं की संख्या कम होने से जैविक संतुलन बिगड़कर नाना प्रकार की विपरीत परिस्थितियों को पैदा करता है जो मनुष्य जीवन पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। अतः प्राणिमात्र की हिंसा किसी की Choice हो, स्वीकृत नहीं की जानी चाहिए।

अब हम वातावरण की भी बात कर लें। आपकी Choice यदि वातावरण को प्रतिकूलता से प्रभावित करती है तो भी बाधित होनी चाहिए। किसी की Choice धूम्रपान है वह स्वयं का नुक्सान तो करता ही है 'पैसिव स्मोकिंग' के द्वारा अन्यों के स्वास्थ्य पर निश्चित रूप से विपरीत प्रभाव डालता है। धुँए के गुब्बार छोड़तीं गाडियाँ इसी कारण स्वीकृत नहीं की जा सकतीं। थोड़ी

गहराई में जाकर अगर वातावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों की बात की जाय तो प्रत्येक मनुष्य द्वारा पसीने, मल-मूत्र के विसर्जन के द्वारा वातावरण को प्रदूषित किया जाता है पर ये तो अनिवार्य हैं इनपर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता। इसीलिए मनीषियों ने व्यवस्था की कि प्रत्येक मनुष्य प्रतिदिन उतनी सुगन्ध अवश्य फैलावे (अग्निहोत्र के माध्यम से) जितना उसने बिगाड़ा किया है। "It's my Choice" की बात करने वालों ने कभी यह विचारा है समाज की इस Choice के बारे में। स्पष्ट है कि किसी भी विवेकशील समाज में व्यक्तिगत Choice यदि वह अन्य के हितों पर तनिक भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है स्वीकृत नहीं की जा सकती। यह भी हम निवेदित करना चाहेंगे कि ऐसी Choice जो किसी के लिए अहितकारी न हो क्या वे अबाधित हो सकतीं है जैसे कोई कहे मेरी मर्जी है मैं आत्महत्या करना चाहता हूँ, गौर से देखें तो यह भी ऐसी Choice है जो कुछ व्यक्तियों पर सीधे-सीधे प्रतिकूल प्रभाव डालती है और वो भी गलत सन्देश के रूप में व्यापकता के साथ समाज पर। तो क्या व्यक्ति को कोई स्वतंत्रता नहीं है। है, निश्चित है। जो-जो भी उसके लिए हितकारी है और अन्यों का अहित नहीं करता उसे करने में वह स्वतंत्र है। अपने शरीर, आत्मा की उन्नति के लिए खान-पान-विचार का वह चयन कर सकता है, अनिवार्य शिक्षा के अंतर्गत विषयों का चयन उसकी Choice है, अच्छे गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर मित्रों का चयन वह करे। इस सन्दर्भ में जो **"Golden Rule"** महर्षि दयानंद ने आर्यों के समाज (**Society of noble person**) के लिए बनाया है उसे उद्धृत करना चाहेंगे जो हमारी राय में व्यक्ति तथा समाज के मध्य अधिकारों तथा कर्तव्यों की सर्वाधिक सटीक मीमांसा करता है। 'प्रत्येक मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।'

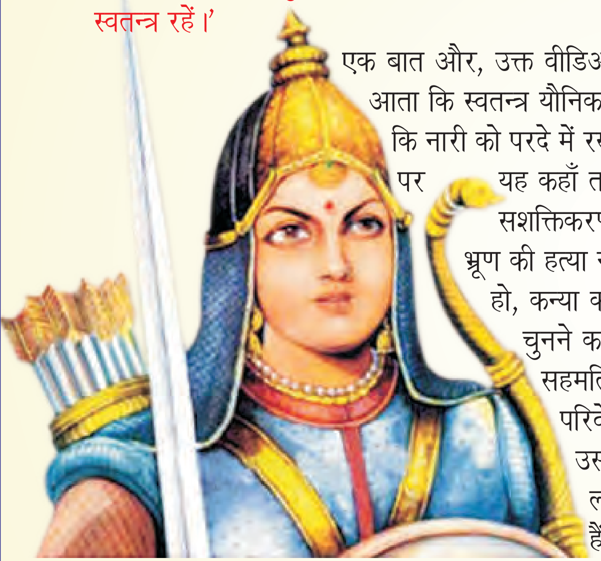

एक बात और, उक्त वीडिओ के सन्देश को नारी सशक्तिकरण से जोड़ा जा रहा है। समझ नहीं आता कि स्वतन्त्र यौनिक आचरण को ही नारी सशक्तिकरण से क्यों जोड़ा जा रहा है। सही है कि नारी को परदे में रखना, मुख्य धारा से काट देना यह मध्यकालीन पुरुषवर्ग की ज्यादती थी पर यह कहाँ तक उचित है कि उसकी प्रतिक्रया में कपड़े न्यूनतम करने को ही नारी सशक्तिकरण कहा जाय। नारी सशक्तिकरण के तो निम्न बिन्दु हो सकते हैं- कन्या भ्रूण की हत्या न हो सके, परिवार व समाज में बच्चों में लिंग के आधार पर विभेद न हो, कन्या को अनिवार्यतः जितनी शिक्षा वह चाहे उसे मिले, उसे अपना कैरिअर चुनने का अधिकार मिले, गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर उसकी प्रसन्नता व सहमति से पति चुनने का अबाधित अधिकार, ऐसी सामजिक व्यवस्था का परिवेश जिसमें अपनी प्रतिष्ठा, जीवन व अपनी अस्मिता की सुरक्षा का उसको पूरा यकीन हो, आदि। क्या अपाला, घोषा, रोमशा, दुर्गावती, लक्ष्मी बाई, इन्दिरा गाँधी आदि नारियाँ सशक्त नारी का उदाहरण नहीं हैं। इन्होंने तो अपना जिस्म कभी नहीं उघाड़ा। वस्तुतः कपड़े उघाड़ना नारी अथवा पुरुष के सशक्तिकरण की नहीं विशुद्ध व्यावसायिकता की चासनी में लिपटी स्व-स्वार्थ सिद्धि हेतु समाज की समरसता को तहस-नहस करने की अनैतिक योजना है। समय रहते देश के कर्णधारों को चेतना चाहिए।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

मानवता के हित में जब,
संघर्ष गति पा जाता है।
मिलता है सम्मान तभी और,
जीवन धन्य हो जाता है।।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

मरघट तक जिन्दा है बाजार

पिछले करीब सौ सालों के दौरान अपने चिर परिचित घर में अपने परिवारजनों, मित्रों के बीच प्राण त्यागने वाले अमेरिकियों की संख्या लागतार घटी है। परिजनों से दूर अस्पतालों, मोक्षगृहों, वृद्धाश्रमों में अजनबी डाक्टरों, नर्सों, परिचायकों के बीच प्राण त्यागने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। कुछ अपवाद हो सकते हैं। पर कुल मिलाकर हममें से ज्यादातर के जीवन में बाजार का प्रवेश बहुत भीतर तक हो गया है। जीते जी बाजार से छुटकारा नहीं। ऐसा कहना अच्छा नहीं माना जा सकता फिर भी कहना पड़ेगा कि कुछ समाजों में तो अब मरकर भी बाजार से छुटकारा नहीं मिलेगा। मृतक न सही, मृतक का पूरा परिवार बाजार से घिरा रहता है। शोक की उस घड़ी में भी सौदे होते रहते हैं। और परिवार को हर चीज के मुँह माँगे दाम चुकाने पड़ते हैं। ये खर्चे इतने अनाप-शनाप बढ़ चले हैं कि अब जीवन बीमा की तरह मृत्यु बीमा भी किया जाने लगा है। बात आरम्भ करें 'द अमेरिकन वे ऑफ डेथ' नामक एक खोजपूर्ण किताब से। कोई आधी सदी पहले विदुषी जेसिका मिटफोर्ड ने यह किताब लिखी थी। किताब लेखिका की एक सहेली के बयान से आरम्भ होती है। उसने अपने एक संबंधी को दफनाने के लिए किसी कंपनी से सम्पर्क किया था। अंतिम संस्कार करने वाली उस कम्पनी ने इस काम मे लिए सात सौ डालर तय किए थे। अचानक कम्पनी के किसी कर्मचारी ने फोन किया कि मृतक उस ताबूत में नहीं समा पायेगा। ताबूत थोड़ा छोटा पड़ रहा है। कम्पनी का सुझाव था कि सौ डालर और देकर दूसरा ताबूत खरीदा जाए ताकि मृतात्मा आराम से सो सके। 'लेकिन महाशय सौ डालकर काफी ज्यादा हैं, मेरे पास तो इतना पैसा नहीं है', सहेली ने जब यह कहा तो उस कर्मचारी ने नए ताबूत के लिए तरह-तरह के प्रलोभन दिए। सहेली तब भी टस से मस नहीं हुई तो अन्त में झल्लाकर कर्मचारी ने कहा, 'तो ठीक है, पुराना वाला ताबूत ही रखिए, लेकिन तब हमें मुर्दे के पैर काटने पड़ेंगे.....।'

कोई पचास साल पुराने इस बाजार में अब एकदम नए जमाने का बाजार पूरी तरह से उतर आया है। इस अमेरिकी महादेश में अंतिम संस्कार का पूरा काम अब अनेक ऐसी ही व्यापारिक कम्पनियों के नियंत्रण में है। शव उठाने से लेकर दफनाने की सामग्री बनाने, बेचने, कब्रिस्तान, कर्मकाण्ड, शवदाह, अवशेष के निपटारे यानी देह की सभी अंतिम क्रियाएँ ऐसी कम्पनियाँ करती हैं। मामला यहीं पर खत्म नहीं होता। संस्कार के बाद किस दर्जे की शोक सभा करनी है- किस दर्जे की जगह पर करनी है, कितनों को बुलाना है- से लेकर पहली बरसी पर कितनों को खबर करनी है कि फलांजी स्वर्ग से आपको याद करते हैं, तक की सारी जिम्मेदारी अब कम्पनियाँ उठाने को तैयार हैं। बस हमें तो सिर्फ कहना भर है। बाकी काम कम्पनी का।

लेकिन मुनाफे का गणित बैठाए बिना भला कोई व्यापार में यों उतरेगा? मरघट के व्यापार में कितना मुनाफा जायज मानें? दस प्रतिशत? पच्चीस प्रतिशत? जी नहीं, इस व्यापार में औसत मुनाफा पाँच सौ प्रतिशत से भी ज्यादा है। यहाँ के न्यूयार्क टाइम्स नामक एक प्रसिद्ध अखबार ने तीन सितम्बर २००२ के अंक में इस विषय पर छपे एक लेख में कहा कि साल भर के दौरान अमेरिका के बीस लाख मृत शरीरों को ठिकाने लगाने के लिए चल पड़े मरघट व्यापार में कम्पनियाँ जितनी रकम वसूलती हैं, वह अमेरिका के ४५ लाख विद्यार्थियों की समूची विश्वविद्यालय पढ़ाई के खर्च से ज्यादा है।

कुछ कम्पनियाँ इतनी बड़ी बन गई हैं कि देश तो छोड़िए, दुनिया के अनेक स्टॉक बाजारों में उनके शेयरों की बोली लगती है। शेयर बाजार में अच्छे दाम के लिए कम्पनी के मुनाफे का अनुपात चढ़ना जरूरी है और भला अंत्येष्टि व्यापार में मुनाफे का क्या अर्थ होगा? मरघट के व्यापारी और क्या चाहेंगे सिवाय इसके कि अधिक से अधिक लोग मरें ताकि व्यापार बढ़े, साथ में मुनाफा भी। अमेरिकी प्रशासन के अनुसार अंतिम संस्कार का खर्च जुटाना आज घर बनाने और कार खरीदने के बाद अमेरिकी नागरिक के जीवन का तीसरा बड़ा खर्च है। देश में सलाना औसतन बीस लाख लोग मरते हैं और मरघट व्यापारियों का औसत मुनाफा तीस अरब डालर से ज्यादा है। इस प्रकार औसत अंतिम संस्कार का खर्च दस हजार डालर से ज्यादा बैठता है। खर्चीले लोगों के लिए तो यह कई गुना ज्यादा ठहरेगा। उनकी बात ही अभी छोड़ें।

कोई सौ बरस पहले तक ऐसा नहीं था। अमेरिकी जन

मानस पर बाजार की पकड़ के साथ ज्यों-ज्यों अस्पतालों, मोक्षगृहों, वृद्धाश्रमों और अंत्येष्टि व्यापार का फैलाव हुआ, मरण और मृत्यु सामाजिक न रहकर एकाकी, नितान्त व्यक्तिगत घटना बनती गई। आज मरणशील व्यक्ति को अस्पतालों, मोक्षगृहों अथवा नर्सिंग होम में भेज देने का रिवाज है। आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि पिछले करीब सौ सालों के दौरान अपने चिर-परिचित घर में अपने परिवारजनों, मित्रों के बीच प्राण त्यागने वाले अमेरिकियों की संख्या लगातार घटी है। परिजनों से दूर अस्पतालों, मोक्षगृहों, वृद्धाश्रमों में अजनबी डाक्टरों, नर्सों, परिचारकों के बीच प्राण त्यागने वालों की संख्या लागतार बढ़ती जा रही है।

मृत्यु की संवेदनशील घटना को सौ साल पहले तक लोग पड़ोसियों, रिश्तेदारों, मित्रों की मदद से खुद ही सँभाल लिया करते थे। अब यह काम कम्पनियों के कारिन्दे व कर्मचारी करते हैं। अंतिम संस्कार एक ऐसी क्रिया है, जिसमें दोस्त, मित्र, रिश्तेदार, पड़ोसी मृतक को आदर देने के भाव से सम्मिलित होते हैं। इससे सहयोग तो होता ही है, शोकाकुल परिजनों का शोक भी बँट जाता है। समाज ने असंख्य पीढ़ियों के अनुभव के आधार पर नितान्त निजी शोक को सार्वजनिक ढंग से बाँट कर हल्का कर लेने की पद्धति विकसित की थी। लेकिन अब तो यह पिछड़े देशों की पुरानी बात हुई। नए आधुनिक और विकसित अमेरिका में अंतिम संस्कार परिवार के हाथ से छीनकर बाजार के हाथों में सौंप दिया गया है। आज पूरा का पूरा व्यापार बन चुका है।

मृत्यु के बारे में यह रहस्यमय प्रश्न सदैव उठा है कि हम क्यों मरते हैं? हालांकि यह प्रश्न निर्णायक तरीके से अब भी हल नहीं हुआ है, पर वैज्ञानिकों का अनुमान है कि शरीर की कोशिकाओं में ही आत्मघात की अनुवांशिकी रहती है। यानि कोशिकाओं की संरचना ही ऐसी है कि अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद वे स्वयमेव नष्ट हो जाती हैं । यह एक प्रकार की हाराकीरी है। अभी यह पता नहीं चल पाया है कि हमारी अनुवांशिकी में यह बात कहाँ से कैसे और क्यों घुस आई। लेकिन यह है इसलिए ही हमारी देह अमर नहीं है और इसीलिए यह संस्कार चल रहा है। माटी का चोला अन्ततः माटी में मिल जाता है।

सन् २०५० तक अमेरिका में ६५ से ज्यादा उम्र वाले नागरिकों की संख्या दस करोड़ से ज्यादा हो जाएगी और इस आयुवर्ग में मृत्यु दर ७० प्रतिशत यानि ७ करोड़ छू लेगी। मृत्यु व्यापार में लगी कम्पनियाँ इसे अपना स्वर्णयुग मानकर अभी से इसके स्वागत की तैयारी में लग गई हैं। नितान्त घरेलू और उसी हद तक एकदम सार्वजनिक इस प्रसंग को व्यापार बनाने का काम इंग्लैण्ड में शुरू हुआ था। सन् १६७५ में लन्दन के एक व्यापारी ने इस बारे में पहला विज्ञापन तैयार किया था जो देखते-देखते खूब चल निकला। परिणामतः कुछ ही समय के भीतर अनेक नए उद्यमी मैदान में उतर आए। सन् १६८१ में रसेल नाम के एक व्यापारी को राजघराने से सम्बन्धित मृतकों के अंतिम संस्कार के प्रबन्ध का एकाधिकार मिला। अगले पाँच दस सालों के दौरान ताबूत बनाने वाले, शोकसभाएँ आयोजित करनेवाले, अंतिम संस्कार का सामान बेचने वाले व्यापारियों की अच्छी खासी फौज खड़ी हो गई। उसके बाद बर्फ बनाने के कारखाने लगे, शव लाने ले जाने वाली घोड़ा गाड़ी, कोचवान, कब्र खोदने वाले अनेक व्यापारी अस्तित्व में आते चले गए।

जब अंग्रेजों ने अमेरिका में अपना उपनिवेश बसाया तो उनके साथ यह व्यवस्था भी यहाँ आ पहुँची। अलबत्ता यहाँ नई बात यह हुई कि अंडर टेकर अर्थात् मुर्दे को नहलाने धुलाने, कब्र तक पहुँचाने वाले लोगों ने चतुराई और व्यावहारिक दूरदर्शिता दिखाते हुए लेपन क्रिया को भी अपने व्यापार में शामिल कर लिया।

इसके पीछे एक विशेष कारण था। अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान बहादुर सिपाही या अधिकारी का शव अपने पक्ष के उत्साहवर्धन के लिए गाँव-गाँव ले जाया जाता था। उसके लिए शव को कुछ समय तक सुरक्षित रखने की आवश्यकता महसूस हुई। इस काम में गृहयुद्ध के दोनों पक्ष काफी रकम अदा करने को उत्सुक रहते थे। इस काम में छिपे मुनाफे को देख सन् १८८३ तक इस काम के लिए अनेक व्यापारी सक्रिय हो चुके थे। ताबूत बनाने वाले लोग भी अपना पूरा ध्यान लेपन यानी शव को कुछ दिन सुरक्षित रखने की कला पर लगाने लगे।

मृत्यु ने एक नए व्यापार को जिन्दा कर दिया। मुनाफे की गुंजाइश भाँप कर पिछली सदी के आरम्भ में कई कम्पनियाँ

अन्त्येष्टि के व्यापार में उतरने लगीं। ऐसी पहली बड़ी कम्पनी का नाम था 'सर्विस कारपोरेशन इन्टरनेशनल'। अमेरिका और कनाडा के अन्त्येष्टि व्यापार का करीब एक चौथाई हिस्सा आज भी इसी कम्पनी के हाथ में है। इस देश में अन्त्येष्टि केन्द्रों की संख्या २३ हजार से कुछ ज्यादा है। इस हिसाब से देखें तो अमेरिका में पाँच में से एक अन्त्येष्टि इसी कम्पनी के हिस्से आती है। इस कम्पनी का व्यापार अब अमेरिका से निकल कर पाँचों महाद्वीपों में फैल गया है। पिछले साल इसका शुद्ध मुनाफा आठ अरब डालर से ज्यादा था। अब चीन भी इस व्यापार में तेजी से पैर जमा रहा है। उस देश में हर साल ७० लाख लोग मरते हैं। ऐसे में मृत्यु के व्यापारी के मुँह से लार टपकना अनिवार्य है। अन्त्येष्टि व्यापार का बड़ा हिस्सा कब्रिस्तान-व्यापार होता है। इस देश में हर परिवार को शव दफनाने के लिए जमीन खरीदनी पड़ती है। कहीं-कहीं सार्वजनिक कब्रिस्तान भी हैं पर उनकी उपलब्धता बेहद अपर्याप्त है। कब्रिस्तान वाली कम्पनियों ने स्थानीय प्रशासनों से हजारों, लाखों एकड़ जमीन कौड़ियों के भाव खरीद रखी है। जैसे जिन्दा रहते हुए मकानों के प्लॉट कटते हैं उसी तरह मरने पर कब्र के लिए प्लॉट काट कर महँगे दामों पर लोगों को बेचे जाते हैं। मृत्यु पर किसी का जोर नहीं। इसलिए मरघट और अन्त्येष्टि व्यापार में हमेशा पौ-बारह रहने वाली है। खराब अर्थव्यवस्था में भी इन कम्पनियों का मुनाफा कम नहीं हो सकता।

आज की नई चलती चीज तो है- ग्रीन, प्राकृतिक अन्त्येष्टि। सब जगह हर्बल, जड़ी बूटी आ गई जिन्दगी में, तो मृत्यु में कैसे पीछे रहे यह सब। इसी तरह जेंडर शब्द भी इस धंधे में चल निकला है। कई स्थानों पर सिर्फ पुरुषों या महिलाओं के मुर्दाघर हैं। यहाँ सभी कर्मचारी महिला हैं। और उनका मुर्दाघर उन महिलाओं की सेवा के लिए खासतौर पर बनाया गया है जो नहीं चाहती थीं कि मृत्यु के बाद उनके शव को कोई पुरुष हाथ लगाए।

कई मुर्दाघर पुलिस के वायरलैस सन्देश सुनने वाले उपकरणों से लैस रहते हैं। कानून के अनुसार देश में कहीं भी मृत्यु होने पर तुरन्त पुलिस को सूचना देनी होती है। मृत्यु की सूचना पाते ही पुलिस तंत्र अपने वायरलैस से क्षेत्रीय मुख्यालय को सूचना भेजता है। मुर्दाघर ऐसे वायरलैस सन्देश पकड़ लेते हैं और तुरन्त अपने हरकारे को मौत वाली जगह भेज देते हैं। अक्सर ये लोग पुलिस के वहाँ पहुँचने से पहले ही पहुँच जाते हैं।

यहाँ की अदालतों में कई बार ऐसे मुकदमे भी आए हैं, जिनमें अन्त्येष्टि व्यापारियों ने एक दूसरे पर एकाधिकार और अस्पतालों, डाक्टरों, नर्सों, मोक्षगृहों के अधिकारियों, कर्मचारियों को रिश्वत खिलाकर अपना व्यापार बढ़ाने के आरोप लगाए हैं। यह भी आरोप है कि अन्त्येष्टि व्यापारी एम्बुलेंस कर्मचारियों की जेबें भी गर्म किए रहते हैं जिससे उन्हें मृत्यु की सूचना तुरत-फुरत मिल जाए। पैसे के लोभ में हमारी सहज संवेदनाएँ कितने नीचे गिर सकती हैं, इसके कई उदाहरण यहाँ रोज मरघटों में दबाए, दफनाए जाते हैं। बाजारों में दुकानों में जाकर हम आप वस्तु की अच्छाई बुराई, दाम आदि की तुलना कर लेते हैं। वस्तु महँगी लगती है तो हमारे पास यह विकल्प भी है कि चलो अभी ही खरीदना जरूरी नहीं। पर मृत्यु के दुःखद प्रसंग में यह सुविधा नहीं रहती है। जो भी फैसला लेना है तुरन्त लेना है। मिट्टी को घर में रखा नहीं जा सकता। इसलिए मुर्दाघरों की निगाह मृतक के परिवार की जेब पर रहती है। इस देश में अधिकांश लोग अपने अंतिम संस्कार के लिए बीमा खरीद कर रखते हैं। मुर्दाघर संचालक यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि मृतक के पास बीमा था या नहीं। परन्तु इसे सीधे सीधे कैसे पूछे? वह कहेगा कि बिल क्या सीधे बीमा कम्पनी को भेज देना है, यह प्रश्न के जवाब से पता चलेगा ही कि मृतक का बीमा था या नहीं। कुछ कम्पनियाँ, नगरपालिकाएँ भी अपने कर्मचारियों की मृत्यु पर अंतिम सस्कार का कुछ खर्च देती हैं। मुर्दाघर संचालक को पता चल गया है कि अंतिम संस्कार के लिए कोई निधि अलग रखी है अब उसे खसोट लेना कठिन नहीं है।

यह पुस्तक 'द अमेरिकन वे ऑफ डेथ' सन् १९६३ में प्रकाशित हुई थी। १९९६ में लेखिका ने पुस्तक का परिवर्धित संस्करण 'द अमेरिकन वे ऑफ डेथ रीविजिटेड' प्रकाशित किया। मूल पुस्तक के आमुख में उन्होंने पुस्तक का उद्देश्य अंतिम संस्कार व्यापार में मुनाफाखोरी का भण्डाफोड़ करना बताया था। परिवर्धित संस्करण की

भूमिका में उन्होंने कहा था कि सन् १९६३ के बाद इस व्यापार के हथकण्डों में कोई बदलाव नहीं आया है। हाँ, सेवाओं के दाम जरूर बढ़ गए हैं।

अमेरिकी जनता ने पुस्तक और इस भंडाफोड़ का तहे दिल से स्वागत किया था। इसका प्रमाण है कि सन् १९६३ में लोगों ने स्वयं संगठित होकर इसके विरुद्ध एक बड़ा आन्दोलन शुरू किया। नाम था 'आडम्बरहीन अन्त्येष्टि'। इस अभियान के शपथ पत्र को देखते हुए कोई सत्रह हजार लोगों ने हस्ताक्षर किए। साल भर में ऐसे लोगों की संख्या पन्द्रह लाख पार कर चुकी थी। व्यावसायिक अखबारों, रेडियो, टीवी व कुछ कट्टरपंथी राजनीतिक नेताओं ने पुस्तक और लेखिका के बारे में कई अफवाहें फैलाईं। उस समय अमेरिकी संसद की प्रतिनिधि सभा मे कैलीफोर्निया का प्रतिनिधित्व करने वाले रिपब्लिकन जेम्स एट ने प्रतिनिधि सभा में दो पेज का अपना बयान पढ़ा ताकि पुस्तक व लेखिका के प्रति आलोचना, निन्दा अमेरिका के संसदीय इतिहास में हमेशा के लिए दर्ज हो जाए। उन्होंने कहा, जेसिका मिटफोर्ड कम्युनिस्ट हैं और उसी कारण उसने हमारे धर्म की निन्दा में यह किताब लिखी है। मैं मरते दम तक किसी कम्यूनिस्ट देश की धरती पर कदम नहीं रखूँगा।' पर इस पुस्तक ने देश के प्रबुद्ध मानस को झकझोर दिया था। एक परिणाम यह हुआ कि अमेरिकी संसद को अनेक प्रचलित कानून रद्द करने पड़े, अनेक नए कानून बनाने पड़े। यह क्रम अभी भी चल रहा है। सन् १९६८ में लागू हुए एक कानून के तहत मुर्दाघर संचालकों के लिए गलत बयानी करना बन्द हुआ।

विद्वान् लेखक ने अमेरिकन परिदृश्य में जानकारी से भरपूर एक चर्चा प्रस्तुत की है। आज भारत में भी कमोवेश यह स्थिति बनती जा रही है। अन्त्येष्टि संस्कार के संदर्भ में भारत में भी व्यावसायिकता अपनी जड़ें जमा रही है अतः पाठकों के लाभार्थ यह लेख हमने दिया है। एक रोचक तथ्य सामने आया है कि अमेरिका में धीरे-धीरे मृत शरीर को दफनाने के स्थान पर अग्निदाह की स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है। विद्वान् लेखक तथा गर्भनाल पत्रिका का आभार।

- सम्पादक

उधर देश में दफन की जगह शवदाह की वसीयत करने वाले अमेरिकियों का प्रतिशत भी बढ़ कर पचास पार कर गया। कुछ प्रान्तों में अब यह साठ से ज्यादा और कुछ में पचहत्तर प्रतिशत हो चुका है। संस्कार की पद्धति में बदलाव का असर बाजार पर पड़ेगा ही। इसलिए अब बाजार ने इससे निपटने के लिए एक नया मोर्चा खोल लिया है। पहले-पहले तो ईसाई व्यक्ति के लिए दाह संस्कार निषिद्ध बताया गया है। लेकिन लोगों की जिद पर कुछ-कुछ स्वीकार किया जाने लगा, पर उसमें भी लेपन और अंतिम दर्शन जैसी बातें जोड़कर। यह रणनीति बड़े सोच विचार के बाद बनाई गई और लेखक ने अन्त्येष्टि व्यापारियों के संगठन के अध्यक्ष के हवाले से कहा कि लोगों को अंतिम दर्शन आदि के लिए राजी करने के उपायों की सफलता ३०० प्रतिशत बढ़ी है। इसके बाद ग्राहक को ताबूत बेचने यानी शरीर को ताबूत में रखकर दाह के लिए बिजली की भट्टी में डालने को राजी करने का उपाय भी हुआ। उसमें ६०० प्रतिशत सफलता दर्ज की गई। इस तरह चलो ताबूत की बिक्री तो जारी रही।

बात यहीं नहीं रुकती। शवदाह के बाद राख को रखने वाले बर्तन, राख को पानी या जंगल में विसर्जित करने के नाम पर ग्राहकों से और पैसा वसूला जाने लगा है। इन सबके बाद भी दाह संस्कार का चलन बढ़ रहा है और मृत्यु के दुःखद प्रसंग में बाजार के बढ़ते प्रवेश पर थोड़ी रुकावट भी आ रही है।

इस विचित्र विषय को समेटते हुए इतना ही कहा जा सकता है कि परिजनों के अंतिम संस्कार में लालची कम्पनियों के दखल से, मरघट में जिन्दा हो चुके बाजार से अपना देश भारत अभी तक बचा हुआ है। पर बकरे की माँ भला कब तक खैर मनायेगी?

साभार- गर्भनाल

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
अब मात्र आधी कीमत में
४०
३५०० रू. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

सामवेद ने की कन्या की माँग

कुछ वर्ष पूर्व मुझे आश्रय भवन कोटा में आयोजित एक संस्कार विषयक गोष्ठी में सम्मिलित होने तथा उसकी अध्यक्षता करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। गोष्ठी के मुख्य वक्ता स्थानीय 'श्री विट्ठलनाथ सदाशिव संस्कृत महाविद्यालय' के प्राचार्य श्री श्यामानन्द जी मिश्र थे। उन्होंने जब पुंसवन संस्कार पर प्रवचन करते हुए कहा कि यह संस्कार गर्भाधान के एक या दो माह के बाद मनाया जाता है। इस संस्कार में परमात्मा से प्रार्थना की जाती है कि वह परिवार को एक श्रेष्ठ पुत्ररत्न प्राप्त कराये। पुत्र की कामना इसलिए की जाती है कि पुत्र परिवार को 'पु' नाम के नरक से बचाता है। तब प्रसिद्ध पर्यावरणविद् तथा जैन धर्म के गहन अध्येता श्री सूरजमल जैन ने खड़े होकर उनसे प्रश्न किया कि क्या वेद में परमात्मा से एक श्रेष्ठ कन्यारत्न प्रदान किए जाने की भी प्रार्थना की जाती है? इस पर वक्ता का उत्तर नकारात्मक था। इस पर विवाद छिड़ गया कि वेद में स्त्री जाति के साथ अन्याय किया गया है उसे दोयम दर्जे का नागरिक माना गया है। स्त्री और पुरुष में समानता का हनन किया गया है। श्री हरिमोहन शर्मा, पूर्व प्रोफेसर हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय, कोटा ने भी यह कहते हुए वक्ता का समर्थन किया कि कन्या तो दूसरे घर की मेहमान है। उसका तो विवाह होते ही इस परिवार से सम्बन्ध लगभग टूट जाता है, वह अपने ससुराल के परिवार की सदस्य बन जाती है। इस परिवार में तो पुत्र ही रहता है, वही माता-पिता और परिवार के सभी सदस्यों की सेवा करता है इसलिए परिवार सदैव पुत्र प्रदान करने की ही परमात्मा से प्रार्थना करता है। श्री सूरजमल जैन इस कथन से सन्तुष्ट नहीं हुए। विवाद बढ़ता देखकर मैंने कहा कि मैं अपने अध्यक्षीय भाषण में इस समस्या का सही हल प्रस्तुत कर दूँगा। चूँकि इस घटना के कुछ समय पूर्व ही मैंने अपनी पुस्तक 'वेदों की वैज्ञानिक अवधारणा' में पढ़ा था कि जब कोई राजनेता राष्ट्रपति के पद पर निर्वाचित होता है तो उसकी पत्नी प्रसन्न होकर कैसे उद्गार व्यक्त करती है और उसमें स्त्री जाति के लिए सम्मान की कैसी भावना व्यक्त होती है।

ऋग्वेद मंडल १० सूक्त १५६ की तीन ऋचाओं में रानी की भावना इस प्रकार व्यक्त हुई है।

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भग:।
अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहि:।।१।।

पदार्थ-(असौ) यह (सूर्य:) सूर्य (उद्गात्) उदय को प्राप्त हो रहा है (अयम्) यह (मामक:) मेरे सम्बन्धी (भग:) ऐश्वर्य अथवा सौभाग्य को (उद्गात्) उदय को प्राप्त हो रहा है। (अहम्) मैं (तत् पतिम्) अपना पति (विद्वला) पा गई हूँ। मैं (विषासहि:) शत्रुओं का पराजय करने वाली होकर (अभि असाक्षि) उनका पराजय करूँ।

भावार्थ- राजा की रानी कहती है कि यह सूर्य उदय हो रहा है। यह मेरा सौभाग्य भी उदय को प्राप्त कर रहा है। मैं अपने पति को पा गई हूँ। मैं शत्रु की नाशक होकर उनके समक्ष उनका पराजय करूँ।

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पति: सेहानाया उपाचरेत् ।।२।।

पदार्थ-(अहम्) मैं रानी (केतु:) सबकी ज्ञात्री हूँ, (अहम्) मैं (मूर्धा) सबकी मस्तक स्थानीय हूँ। (अहम्) मैं (उग्रा) उग्र और (विवाचनी) विशेष रूप से वाचयित्री हूँ। (सेहनाया) सबकी अभिभवित्री (मम) मुझ पत्नी की (क्रतुम्) बुद्धि अथवा व्यवहार को (इत्) ही (अनु) लक्ष्य में रखकर (पति:) पति (उपाचरेत्) मुझे प्राप्त होंगे।

भावार्थ- मैं रानी सबकी ज्ञात्री हूँ। मैं सबकी मूर्धा के समान हूँ। मैं उग्र और विशेष वक्त्री हूँ। सपत्नी का मर्दन करने वाली मुझ पत्नी को मति और कृति के अनुरूप ही पति व्यवहार करे।

मम पुत्रा:शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तम:।।३।।

पदार्थ- (मम) मेरे (पुत्रा:) पुत्रलोग (शत्रुहण:) शत्रु का नाश करने वाले हैं (मे) मेरी (दुहिता) पुत्री (विराट्) विशेष राजमाना है। (उत) और (अहम्) मैं (संजया:) भली प्रकार जीतने वाली (अस्मि) हूँ। (पत्यौ) पति में (मे) मेरा (श्लोक) यश (उत्तम:) आकृष्ट है।

भावार्थ- मेरे पुत्र शत्रुओं का नाश करने वाले हैं, मेरी पुत्री विशेष राजमाना है। और मैं स्वयं विजय करने वाली हूँ और पति में मेरा यश अति उत्तम है।

इन तीन मंत्रों में हम स्त्री की स्थिति का वास्तविक अनुभव

कर रहे हैं। उसका स्थान समाज में दोयम दर्जे का नहीं है। वास्तव में पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक होते हैं, उनमें छोटे बड़े का प्रश्न ही नहीं उठता है। आज के विज्ञान की भी यही मान्यता है। मेरे व्याख्यान के पूर्व श्री सूरजमल जी जैन चले गए थे। शेष लोग इस सामान्य विवेचन से ही सन्तुष्ट हो गए परन्तु मैं स्वयं असन्तुष्ट रहा। फिर बंगलोर की मारन हल्ली आर्य समाज ने मेरा 'वेदों में नारी का स्थान' विषय पर व्याख्यान करवाया। तब मुझे इस विषय पर अधिक अध्ययन करने की आवश्यकता अनुभव हुई। इस हेतु मैंने वेदों का विहंगावलोकन करना प्रारम्भ किया।

मैं उन दिनों श्री हरिशरण सिद्धान्तालंकार द्वारा किए गए सामवेद के भाष्य को पढ़ रहा था। उन्होंने सामवेद के मंत्र संख्या १४६० व १४६१ का जो भाष्य किया उसने मुझे बड़ी सहावती दी। इन मंत्रों के ऋषि वसिष्ठ हैं। उन्होंने लिखा है कि जब वसिष्ठ ने अपने विवाह के समय अपनी पत्नी का हाथ थामा तो उन्होंने उसका हाथ थामते हुए कहा था, **'त्वया वयं धारा उदन्या इव अतिगाहे महि द्विव।'** तेरे साथ मिलकर अप्रीतिकर दुर्गणों को ऐसे तैर जायें जैसे पर्वतीय जल धाराओं को हाथ पकड़ कर हम पार करते हैं।

अब हम मंत्र संख्या १४६० पर विचार करते हैं-

जनीयन्तो न्वग्रव: पुत्रीयन्त: सुदानव:। सरस्वन्तꣳ हवामहे।

पदार्थ (जनीयन्तः) स्त्री की चाहना करते हुए (पुत्रीयन्तः) और पुत्री की कामना करते हुए (सुदानवः) परोपकारी (अग्रवः) हम उपासक (न) आज (सरस्वन्तम्) सर्वज्ञ परमात्मा को (हवामहे) पुकारते हैं।

यहाँ पं. हरिशरण जी ने (अग्रवः) का अर्थ 'आगे बढ़ सकेंगे' किया है वह भी उचित ही है।

भावार्थ- मंत्र का भावार्थ यह है कि इस संसार सागर को अकेले पार करना अत्यन्त कठिन है परन्तु पति-पत्नी मिलकर इसे पार कर सकते हैं। उन्होंने यहाँ पुत्री रूप सन्तान

की भी इसलिए कामना की है कि संसार से जाने पर अपना कोई अंश या चिह्न तो छोड़ जावें जिससे कि परोपकार का कार्य लगातार चलता रहे। पंडित तुलसीराम ने अपने सामवेद भाष्य में इस मंत्र का भाष्य करने के अनन्तर लिखा है- सामश्रमी जी कहते हैं कि बेवर के मत में यह एक ऋचा का सूक्त नहीं है किन्तु दो ऋचाओं को प्रगाथ है तथा च अगली 'उत नः ..' यह ऋचा इसी सूक्त की दूसरी ऋचा है। अब हम अगली ऋचा संख्या १४६१ पर विचार करते हैं।

उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा।
सरस्वती स्तोम्या भूत्। - साम. १४६१

इस ऋचा में सुख देने वाली, मनोहर सर्वप्रिय सरस्वती का वर्णन है जो सात बहिनों, पाँच प्राण, मन और बुद्धि के समान स्तुति करने के योग्य है।

इससे तो यही सिद्ध होता है कि मंत्र में एक सुलक्षणा कन्या की ही कामना की गई है।

वास्तव में वेदों में स्त्री और पुरुष में किसी को यदि दूसरे से श्रेष्ठ बतलाया गया है तो वह स्त्री ही है। स्वयंवर में आये सैंकड़ों युवकों में से एक को पति के रूप में चुनने का अधिकार उसी को है। पुरुष को यह अधिकार कहाँ है कि वह सैंकड़ों अविवाहित कन्याओं में से एक को अपनी पत्नी के

रूप में चुन ले। यह भी सिद्ध है कि चुनने वाला चुना जाने वाले से श्रेष्ठ होता है। फिर वेद में तो परमात्मा को माता और पिता दोनों माना है।

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।

हम तो अपने श्रेष्ठ पुरुषों को स्मरण करते समय भी उनकी पत्नियों का नाम पहिले उच्चारित करते हैं- जैसे सीता-राम, उमा पति महादेव आदि। वास्तव में सामवेद ने इन दो मंत्रों द्वारा सिद्ध कर दिया है कि वेद में पुत्री की भी कामना की जाती है। इति।

- शिवनारायण उपाध्याय
७३-शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राज.) पिन ३२४००९

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १५ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १५** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री धनराज सिंह कुशवाह, बारां (राज.), श्री बनवारी लाल झवर, हरदा (म.प्र.), श्री अंकित कुमार, नालन्दा (बिहार), श्री शिवकुमार शास्त्री, सम्भल (उ.प्र.), श्री अमर सिंह पाल, बीकानेर (राज.), कविता खेमदा, बीकानेर (राज.), श्री रामकरण मुण्ड, बीकानेर (राज.), श्रीमती मदुलिका पाराशर, दौसा (राज.), दिव्या शर्मा, अमृतसर (पंजाब), श्री भूराराम आर्य, नागौर (राज.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

क्या अनुच्छेद ३७० का समर्थन देशद्रोह नहीं?

रास्ते को भी दोष दे, आँख भी कर लाल।
चप्पल में जो कीलें हैं पहले उनको निकाल।

इन दो पंक्तियों में इतनी बड़ी सीख है, जिसकी तो तथाकथित राजनीतिक लोग कल्पना भी नहीं कर सकते। कश्मीर के रास्ते को हम भले दोष दें, आँख कितनी भी लाल करके गुस्से का इजहार करें, परन्तु सत्य से कैसे विमुख हुआ जा सकता है कि कश्मीर की समस्या पंडित जवाहरलाल नेहरू की देन है। भाजपा ने बात धारा ३७० को हटाने की चलाई तो जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने धमकी भरे लहजे में कहा कि भाजपा में हिम्मत है तो वह धारा ३७० को हटाकर दिखाए। ऐसा कोई भी प्रयास हमारी लाशों से गुजरकर ही पूरा होगा। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवानी ने उमर अब्दुल्ला के इस बयान पर कड़ी नाराजगी जताते हुए उन्हें सलाह दी कि वह धोखे और छल से शब्दों का प्रयोग न करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि भाजपा शुरू से ही धारा ३७० के खिलाफ थी। उन्होंने उमर को सलाह दी कि भाजपा के विचारों से असहमति का उन्हें पूरा अधिकार है, परन्तु वे आक्रामक भाषा का प्रयोग न करें।

जहाँ तक इस मुद्दे पर कांग्रेस का सवाल है, वह बोलेगी नहीं, क्योंकि वह पंडित नेहरूजी की गलती को गलती नहीं कह सकती। नरेन्द्र मोदी ने ठीक ही कहा है कि सरदार पटेल ने पूरे देश को एक कर दिया, लेकिन पंडित नेहरू के पास जम्मू कश्मीर का मसला था, जिन्होंने आधा कश्मीर यानी २/५ कश्मीर पाकिस्तान को दे डाला और धारा ३७० लागू कर भारत के जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा दे डाला। एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो संविधान बना दिए गए। आखिर यह अनुच्छेद ३७० क्या बला है? भारतीय संविधान में अनुच्छेद ३७० को शामिल करने के क्या दुष्परिणाम निकले? इस अनुच्छेद से हमने क्या खोया और उन्होंने क्या पाया?

सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक ही नागरिकता है जिसे हम भारतीय नागरिकता कहते हैं। जम्मू और कश्मीर में एक राज्य नागरिकता की भी व्यवस्था है। यहाँ के नागरिक को भारत के अन्य नागरिकों जैसी सुविधाएँ हैं परन्तु अन्य प्रदेशों के नागरिक यहाँ तक कि बिहार से आये राज्यपाल भी यहाँ विधानसभा में मतदान नहीं कर सकते। जबकि लोकसभा में वह मतदान कर सकते हैं। थोड़ी विडम्बनाएँ और देखें।

इस प्रदेश की महिला का यदि भारत के किसी अन्य प्रदेश में विवाह होता है तो उसे अपनी पैतृक सम्पत्ति और प्रदेश की नागरिकता से हाथ धोना पड़ सकता है, परन्तु यदि वह किसी पाकिस्तानी से विवाह करती है तो वह यहाँ की नागरिकता प्राप्त कर सकता है। भारत के संविधान के केवल अनुच्छेद १ और अनुच्छेद ३७० की ही यहाँ प्रासंगिकता है। अतः भले आप इसे अपना अभिन्न अंग कहते रहिए, इस पूरे भारत में जम्मू कश्मीर ही ऐसा राज्य है, जिसका अलग संविधान है। भारत के संविधान से इसे कोई लेना देना नहीं। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित सारे फैसले भी यहाँ लागू नहीं होते और संसद द्वारा पारित वही कानून यहाँ लागू हो सकते हैं, जिनकी जम्मू कश्मीर विधानसभा पुष्टि कर दे।

आपने देखा होगा संसद द्वारा पारित कानूनों में स्पष्ट लिखा रहता है-'एप्लिकेबल इन होल इंडियन यूनियन एक्सेप्ट जे एंड के' सचमुच यह कितने शर्म की बात है। यहाँ ध्वज भी एक नहीं, दो हैं। एक ध्वज इस प्रदेश का है जो तिरंगे के साथ-साथ फहराया जाता है।

अति संक्षेप में पंडित जवाहर लाल नेहरू इस अनुच्छेद ३७० को लेकर बाबा साहब के पास पहुँचे और तर्क-कुतर्क देकर उनकी राय जाननी चाही। बाबा साहब

बोले ऐसा प्रावधान प्राणघातक सिद्ध होगा और इसके फलस्वरूप बड़ी अलगाववादी धारणा पनपेगी, आप इसका जिक्र ही न करें। बाबा साहब प्रखर राष्ट्रवादी थे। पंडित जवाहर लाल नेहरू की इस बात से वे अत्यन्त व्यथित हुए। तीसरे दिन अनुच्छेद ३७० के उसी मसौदे को लेकर उनके घर के सामने शेख अब्दुल्ला खड़े थे। पंडित नेहरू ने उन्हें कहा था कि बाबा साहब को इस विषय में मनाना जरूरी है। शेख को देखते ही बाबा साहब बिफर पड़े थे। उन्होंने कहा था– 'तुम चाहते हो कि भारत पर कश्मीर की रक्षा की सारी जिम्मेदारी रहे परन्तु भारतीय संसद का उस पर कोई अधिकार न हो। मैं इस देश का विधि मंत्री हूँ और मुझे भारत के हितों की रक्षा करनी है। तुम वापस चले जाओ फिर मेरे पास न आना।' शेख ने सारी स्थिति पंडित नेहरू को बताई तो वह चिन्ता में पड़ गए। उसी रात पंडित नेहरू ने देश के रियासती राज्यमंत्री गोपाल स्वामी आयंगर को बुलवाया और धमकी भरे शब्दों में उनसे कुछ ऐसी बातें कहीं, जिनके कारण वह इस प्रस्ताव को संविधान सभा के समक्ष रखने को तैयार हुए।

संविधान सभा में इसका बड़ा भारी विरोध हुआ। यहाँ तक कि हसरत मोहानी ने चेतावनी भरी भाषा में कहा– 'अब इस सभा को यह समझ लेना चाहिए कि पंडित नेहरू की वास्तविक मंशा क्या है?' उस समय इसे पूर्णतः 'अस्थायी' बताया जा रहा था परन्तु अब तक यह चला आ रहा है। इसने अलगाववाद को ही बढ़ावा दिया है। आखिर इसे बनाए रखने का औचित्य क्या है? यदि सर्वोच्च न्यायालय इसके परिपेक्ष्य में अस्थायी शब्द की व्याख्या कर दे, तो यह स्वतः ही निरस्त हो जायेगा। मैंने इतना लम्बा आलेख लिखा है और मैं इसी पृष्ठभूमि में भारत की जनता से यह पूछना चाहता हूँ कि अनुच्छेद ३७० का जम्मू कश्मीर में लागू रहना राष्ट्रद्रोह है कि नहीं? अगर यह राष्ट्रदोह है, तो हटाए जाने के मार्ग में जो भी अड़चनें डालता है। वह राष्ट्रद्रोही है कि नहीं?

– अश्विनी कुमार
(साभार– दिव्ययुग)

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१७

रिक्त स्थान भरिये– सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)– पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ल्य	■	२ न	२	■	३	ध्या	३	क	■
४ वि	४	■	■	■	५ गा		५		५ न्त्र	■
६	ण्ड	■	७	७ र	■	८ प		८	श्व	८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. आचार्य कुल में चाहे राजघराने के बालक-बालिका हो या निर्धन परिवार के सभी को कैसे वस्त्र, खान-पान आदि देने चाहिये?
२. क्या गुरुकुल की छात्र-छात्रायें अध्ययन काल में अपने माता-पिता से मिल अथवा पत्र व्यवहार कर सकते हैं?
३. बच्चे जब भ्रमण करने जाएँ तो उनके साथ कौन रहे?
४. सभी छात्र-छात्राएँ सांसारिक चिन्ताओं से मुक्त होकर किसे बढ़ाने की चिन्ता करे?
५. पिता-माता वा अध्यापक अपने लड़का-लड़कियों को अर्थ सहित किसका उपदेश कर दें?
६. जो माता-पिता ५वें वा ८वें वर्ष तक भी अपने लड़के तथा लड़कियों को पाठशाला न भेजें तो वे किसके भागी हो?
७. बच्चों का प्रथम यज्ञोपवीत संस्कार कहाँ हो?
८. किसे छोड़कर अन्य का ध्यान न करें?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– १५ का सही उत्तर

१. माता २. पाँच ३. आचार्य्यकुल ४. अमृत ५. औषधसेवन ६. प्रत्युपकार ७. कृपादृष्टि

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०१५

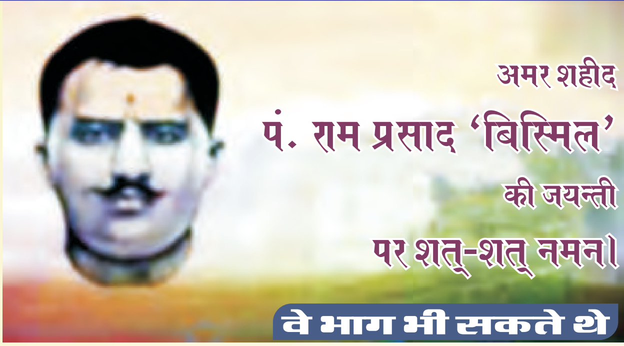

वे भाग भी सकते थे

'गिरफ्तारी से पहले ही मुझे अपनी गिरफ्तारी का पूरा पता चल गया था। गिरफ्तारी के पूर्व भी यदि इच्छा करता तो पुलिस वालों को मेरी हवा न मिलती, किन्तु मुझे तो अपनी शक्ति की परीक्षा करनी थी। गिरफ्तारी के बाद सड़क पर आधा घण्टे तक बिना किसी बंधन के खुला हुआ बैठा था। केवल एक सिपाही निगरानी के लिए पास बैठा हुआ था, जो रात भर का जागा था। सब पुलिस अफसर भी रात भर के जगे हुए थे, क्योंकि गिरफ्तारियों में लगे रहे थे। सब आराम करने चले गए थे। निगरानी वाला सिपाही भी घोर निद्रा में सो गया! दफ्तर में केवल एक मुन्शी लिखा-पढ़ी कर रहे थे। यह भी श्रीयुत् रोशनसिंह अभियुक्त के फूफीजात भाई थे। यदि मैं चाहता तो धीरे से उठकर चल देता। पर मैंने विचारा कि मुन्शी जी महाशय बुरे फँसेंगे। मैंने मुंशी जी को बुलाकर कहा- कि यदि भावी आपत्ति के लिए तैयारी हो तो मैं जाऊँ। वे मुझे पहले से जानते थे। पैरों पड़ गए कि गिरफ्तार हो जाऊँगा, बाल बच्चे भूखे मर जायेंगे। मुझे दया आ गई। एक घण्टे बाद श्री अशफाकउल्ला खाँ के मकान की कारतूसी बन्दूक और कारतूसों से भरी हुई पेटी लाकर उन्हीं मुंशी जी

के पास रख दी गई और मैं पास ही कुर्सी पर खुला हुआ बैठा था। केवल एक सिपाही खाली हाथ पास में खड़ा था। इच्छा हुई कि बन्दूक उठाकर कारतूसों की पेटी को गले में डाल लूँ, फिर कौन सामने आता है! पर फिर सोचा कि मुंशी जी पर आपत्ति आएगी, विश्वासघात करना ठीक नहीं। उस समय खुफिया पुलिस के डिप्टी-सुपरिटेण्डेंट सामने छत पर आये। उन्होंने देखा कि मेरे एक ओर कारतूस तथा बन्दूक पड़ी है, दूसरी ओर श्रीयुत् प्रेमकृष्ण का माऊजर पिस्तौल तथा कारतूस रखे हैं, क्योंकि ये सब चीजें मुंशी जी के पास आकर जमा होती थीं और मैं बिना किसी बंधन के बीच में खुला हुआ बैठा हूँ। डिप्टी-सुपरिटेण्डेंट को तुरन्त सन्देह हुआ, उन्होंने बन्दूक तथा पिस्तौल को वहाँ से हटवाकर मालखाने में बन्द करवाया। निश्चय किया कि अब भाग चलूँ। पाखाने के बहाने से बाहर निकल गया। एक सिपाही कोतवाली से बाहर दूसरे स्थान में शौच के निमित्त लिवा लाया। दूसरे सिपाहियों ने उससे बहुत कहा कि रस्सी डाल लो। उसने कहा मुझे विश्वास है यह भागेंगे नहीं। पाखाना नितान्त निर्जन स्थान में था। मुझे पाखाना भेजकर वह सिपाही खड़ा होकर सामने कुश्ती देखने में मस्त है! हाथ बढ़ाते ही दीवार के ऊपर और एक क्षण में बाहर हो जाता,

स्वतंत्रता के ये दीवाने अलग ही मिट्टी के बने थे। मातृभूमि की बलिवेदी पर शीश चढ़ाने की जैसे इन्हें शीघ्रता थी। पं. रामप्रसाद को भागने के अनेक अवसर मिले परन्तु ऐसा करने से अन्य व्यक्ति पर संकट उपस्थित हो जावेगा यह सोचकर प्रत्येक बार भागने का विचार स्थगित कर दिया। प्रस्तुत है उनकी आत्मकथा से कुछ संस्मरण। – सम्पादक

फिर मुझे कौन पकड़ पाता? किन्तु तुरन्त विचार आया कि जिस सिपाही ने विश्वास करके तुम्हें इतनी स्वतन्त्रता दी, उसके साथ विश्वासघात करके भागकर उसको जेल में डालोगे? क्या यह अच्छा होगा? उसके बाल-बच्चे क्या कहेंगे? इस भाव ने हृदय पर एक ठोकर लगाई। एक ठंडी सांस भरी, दीवार से उतरकर बाहर आया, सिपाही महोदय को साथ लेकर कोतवाली की हवालात में आकर बन्द हो गया। लखनऊ जेल में काकोरी के अभियुक्तों को बड़ी भारी आजादी थी। राय साहब पं. चम्पालाल जेलर की कृपा से हम कभी न समझ सके कि जेल में हैं या किसी रिश्तेदार के यहाँ मेहमानी कर रहे हैं। जैसे माता-पिता से छोटे-छोटे लड़के बात-बात पर ऐंठ जाते। पं. चम्पालाल जी का ऐसा हृदय था कि वे हम लोगों से अपनी संतान से भी अधिक प्रेम करते थे। हममें से किसी को जरा सा भी कष्ट होता था, तो उन्हें बड़ा दुःख होता था। हमारे तनिक से कष्ट को भी वह स्वयं न देख सकते थे। और हम लोग ही क्यों, उनकी जेल में किसी कैदी या सिपाही, जमादार या मुन्शी- किसी को भी कोई कष्ट नहीं था। सब बड़े प्रसन्न रहते थे। इसके अतिरिक्त मेरी दिनचर्या तथा नियमों का पालन देखकर पहरे के सिपाही अपने गुरु से भी अधिक मेरा सम्मान करते थे। मैं यथानियम जाड़े, गर्मी तथा बरसात में प्रातःकाल तीन बजे से उठकर संध्यादि से निवृत्त हो नित्य हवन भी करता था।

प्रत्येक पहरे का सिपाही देवता के समान मेरी पूजा करता था। यदि किसी के बाल-बच्चे को कष्ट होता था तो वह हवन की भभूत ले जाता था! कोई जंत्र माँगता था। उनके विश्वास के कारण उन्हें आराम भी होता था तथा उनकी श्रद्धा और भी बढ़ जाती थी। परिणामस्वरूप जेल से निकल जाने का पूरा प्रबन्ध कर लिया। जिस समय चाहता चुपचाप निकल जाता। एक रात्रि को तैयार होकर उठ खड़ा हुआ। बैरक के नम्बरदार तो मेरे सहारे पहरा देते थे। जब जी में आता सोते, जब इच्छा होती बैठ जाते, क्योंकि वे जानते थे कि यदि सिपाही या जमादार सुपरिण्टेंडेंट जेलर के सामने पेश करना चाहेंगे, तो मैं बचा लूँगा। सिपाही तो कोई चिन्ता ही न करते थे। चारों ओर शान्ति थी। केवल इतना प्रयत्न करना था कि लोहे की कटी हुई सलाखों को उठाकर बाहर हो जाऊँ। चार महीने पहले से लोहे की सलाखें काट ली थीं। काटकर वे ऐसे ढंग से जमा दी थीं कि सलाखें धोई गईं, रंगत लगवाई गई, तीसरे दिन झाड़ी जातीं, आठवें दिन हथोड़े से ठोकी जातीं और जेल के अधिकारी नित्य प्रति सायंकाल घूमकर सब ओर दृष्टि डाल जाते थे, पर किसी को कोई पता न चला! जैसे ही मैं जेल से भागने का विचार करके उठा था, ध्यान आया कि जिन पं. चम्पालाल की कृपा से सब प्रकार के आनन्द भोगने की स्वतन्त्रता जेल में प्राप्त हुई, उनके बुढ़ापे में जबकि थोड़ा-सा समय ही उनकी पेंशन के लिए बाकी है, क्या उन्हीं के साथ विश्वासघात करके निकल भागूँ? सोचा जीवन भर किसी के साथ विश्वासघात न किया। अब भी विश्वासघात न करूँगा। उस समय मुझे यह भली भाँति मालूम हो चुका था कि मुझे फाँसी की सजा होगी, पर उपरोक्त बात सोचकर भागना स्थगित ही कर दिया। ये सब बातें चाहे प्रलाप ही क्यों न मालूम हों, किन्तु सब अक्षरशः सत्य हैं, सबके प्रमाण विद्यमान हैं।

– पण्डित राम प्रसाद 'बिस्मिल'
(आत्म कथा से साभार)

वो थे पापा

जब मम्मी डाँट रही थी तो कोई चुपके से,
हँसा रहा था,
वो थे पापा..........
जब मैं सो रहा था तब कोई चुपके से,
सिर पर हाथ फिरा रहा था,
वो थे पापा..........
जब मैं सुबह उठा तो कोई बहुत थक कर भी,
काम पर जा रहा था,
वो थे पापा..........
खुद कड़ी धूप में रह कर कोई मुझे,
ए.सी. में सुला रहा था, वो थे पापा..........
सपने तो मेरे थे पर उन्हें पूरा करने का,
रास्ता कोई और बताये जा रहा था,
वो थे पापा..........
मैं तो सिर्फ अपनी खुशियों में हँसता हूँ,
पर मेरी हँसी देख कर कोई,
अपने गम भुलाये जा रहा था,
वो थे पापा..........
फल खाने की ज्यादा जरूरत तो उन्हें थी,
पर मुझे कोई सेब खिलाये जा रहा था,
वो थे पापा..........
खुश तो मुझे होना चाहिए कि वो मुझे मिले,
पर मेरे जन्म लेने की खुशी कोई,
और मनाये जा रहा था,
वो थे पापा..........

ये दुनिया पैसों से चलती है,
पर कोई सिर्फ मेरे लिए
पैसे कमाये जा रहा था,
वो थे पापा.........
घर में सब अपना प्यार दिखाते हैं,
पर कोई बिना दिखाये भी
इतना प्यार किये जा रहा था,
वो थे पापा.........
पेड़ तो अपना फल खा नहीं सकते
इसलिए हमें देते हैं,
पर कोई अपना पेट खाली रखकर भी
मेरा पेट भरे जा रहा था,
वो थे पापा.........
मैं तो नौकरी के लिए घर से
बाहर जाने पर दुःखी था पर,
मुझसे भी अधिक आँसू कोई
और बहाये जा रहा था,
वो थे पापा.........
मैं अपने 'बेटा' शब्द को सार्थक
बना सका या नहीं पता नहीं,
पर कोई बिना स्वार्थ के
अपने 'पिता' शब्द को
सार्थक बनाये जा रहा था,
वो थे पापा.........

प्रस्तुति- विकास एवं मनीष पाटोदी

The ancient sound of "OM"

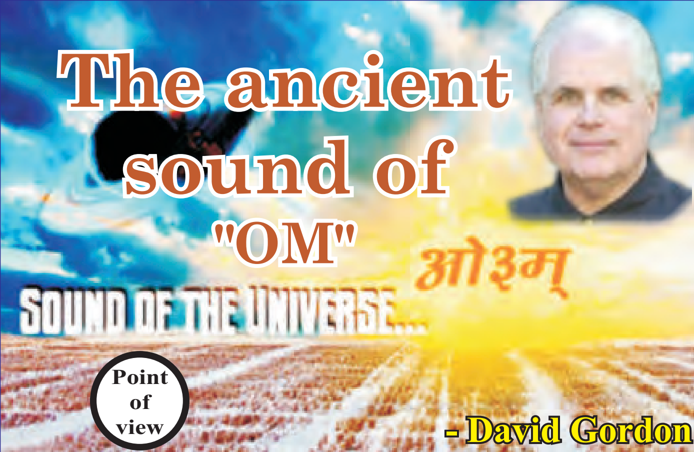

- David Gordon

{David is a singer and vocal coach who lives in southern Oregon.}

Ancient teachings and modern science agree: you, I, all living things, all things in existence are made up at their most essential level of vibrating, pulsing energy.

For millennia, mystics have recounted their experience of this energy, which is said to manifest in our hearing awareness as a humming vibration around and within everything else.

In the Sanskrit tradition, this sound is called "Anahata Nada," the "Unstruck Sound." Literally, this means "the sound that is not made by two things striking together." The point of this particular distinction is that all ordinary audible sounds are made by at least two elements: bow and string; drum and stick; two vocal cords; two lips against the mouthpiece of the trumpet; the double reed of the oboe; waves against the shore; wind against the leaves. All sounds within our range of hearing are created by things visible or invisible, striking each other or vibrating together, creating pulsing waves of air molecules which our ears and brain interpret as sound.

So, sound that is not made of two things striking together is the sound of primal energy, the sound of the universe itself. Joseph Campbell likens this unstruck vibration to the humming of an electrical transformer, or the (to our ears) unheard hummings of atoms and molecules.

And the ancients say that the audible sound which most resembles this unstruck sound is the syllable OM. Tradition has it that this ancient mantra is composed of four elements: the first three are vocal sounds: A, U, and M. The fourth sound, unheard, is the silence which begins and ends the audible sound, the silence which surrounds it.

There are several traditional and allegorical interpretations of this ancient sound.

One ancient tradition of AUM

The lovliest explanation of OM is found within the ancient Vedic and Sanskrit traditions. We can read about AUM in the marvelous Manduka Upanishad, which explains the four elements of AUM as an allegory of the four planes of consciousness.

"A" (pronounced "AH" as in "father") resonates in the center of the mouth. It represents normal waking consciousness, in which subject and object exist as separate entities. This is the level of mechanics, science, logical reason, the lower three chakras. Matter exists on a gross level, is stable and slow to change.

Then the sound "U" (pronounced as in "who") transfers the sense of vibration to the back of the mouth, and shifts the allegory to the level of dream consciousness. Here, object and subject become intertwined in awareness. Both are contained within us. Matter becomes subtle, more fluid, rapidly changing. This is the realm of dreams, divinities, imagination, the inner world.

"M" is the third element, humming with lips gently closed. This sound resonates forward in the mouth and buzzes throughout the head. (Try it.) This sound represents the realm of deep, dreamless sleep. There is neither observing subject nor observed object. All are one, and nothing. Only pure consciousness exists, unseen, pristine, latent, covered with darkness. This is the cosmic night, the interval between cycles of creation, the womb of the divine Mother.

> "अभी हाल ही में समाचार मिले हैं कि सरकार योग में से 'ओ३म्' को निकाल इसे सेक्यूलर तथा सर्वस्वीकार्य बनाना चाहती है। इसका सीधा अर्थ है ऐसा सोचने वाले योग का अर्थ ही नहीं जानते। वे केवल व्यायामादि को ही योग मानते हैं। जबकि परमपिता परमात्मा (ओ३म्) का साहचर्य ही योग का परम लक्ष्य है। 'ओ३म्' को निकाल देने से 'योग' किससे होगा? कितनी बड़ी विडम्बना है कि जब अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय 'ओ३म्' को विशुद्ध ध्वनि के रूप में ब्रह्माण्ड में व्याप्त सिद्ध कर रहा है, वहाँ हम इस प्रकार की सोच रखते हैं।
> – सम्पादक"

The Yoga of AUM

It might be said that the ultimate aim of Yoga is to enter this third dreamless realm while awake. Yoga means "yoke" or "join." Through yoga we "join" our waking consciousness to its "source" in the world of pure, quality less unconsciousness.

Which brings us to the fourth sound of AUM, the primal "unstruck" sound within the silence at the end of the sacred syllable. In fact, the word "silence" itself can be understood only in reference to "sound." We hear this silence best when listening to sound, any sound at all, without interpreting or judging the sound. Listening fully, openly, without preconceptions or expectations. The sound of music, the sound of the city, the sound of the wind in the forest. All can give us the opportunity to follow the path of sound into the awareness of the sound behind the sound.

When one really "listens" to this silent sound, this unstruck vibration, one comes inevitably to stillness, to pure and open existence. The poet Gerhart Hauptmann says the aim of all poetry is *"to let the Word be heard resounding behind words."* The sound behind the sound. And, in making the sound of AUM, we hear this unstruck sound most clearly in the instant when the last humming vibrations of the "M" fade away. At that moment, that instant separating audible sound and silence, the veil is thinnest, and

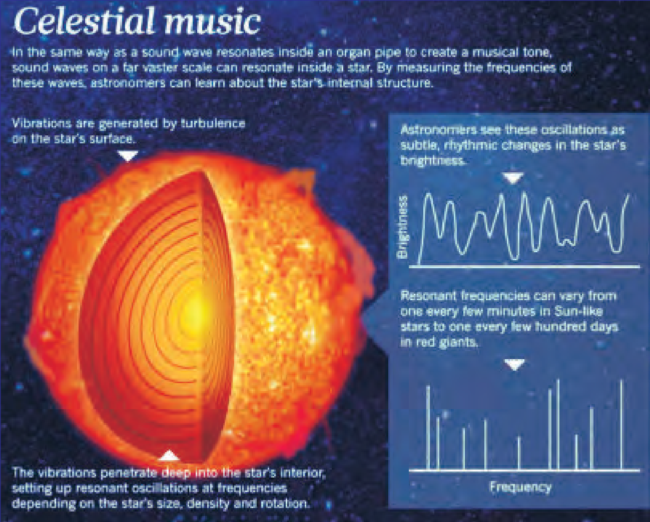

our listening awareness is most expansive.
At that moment of silence, to use William Blake's words, the "doors of perception" are cleansed, and "everything would appear to man as it is, infinite."
Another way to make the AUM sound
One of my favorite exercises with the sacred AUM sound involves a more modern interpretation of its elements. In short: "A" is the sound of infinite expanding energy in the universe, the energy of unity consciousness and Divine Love; "U" is the sound of that very energy manifesting and materializing in our waking reality; with the sound of "M" we absorb and integrate that energy into our own being. In the silence after the sound we give thanks and allow the process to resonate within us.
Try this: stand comfortably, feet shoulder width apart, hands and arms hanging easily at your sides. Prepare to make the "AUM" sound, all three vowels in one seamless breath. Inhale gently, easily, expanding into your belly as you breathe. Open your mouth fully as you inhale, as if to "inhale" the "A" sound itself, creating the intention of the sound before the sound actually begins.
Then, as you begin to make the "A" sound, raise your arms out to the side, as if opening to embrace all the universe. Than as your voice transitions seamlessly to the "U" sound, extend your arms to the front, as if to hold something precious and powerful in your hands. You might wish to visualize some shape, round and energetic, manifesting between the palms of your hands. Then, gliding from "U" to the "M" sound, bring your hands, and whatever they may contain, to your heart center. Finally, in the echo of the silence, bring your palms to your chest, pressing them lovingly to your heart. Breathe gently.
Repeat this exercise several times. It is remarkably centering and relaxing.

Find your own way

The most important aspect of this second form of AUM is the combination of *sound and movement.* It really doesn't matter what "images" you create in your mind as you do this exercise, or what specific significance you choose to attribute to each of the individual vowel sounds. The mere fact that you are intoning this ancient sound, and combining it with gentle intuitive movements of the upper body, will have a naturally gentle and balancing effect on your body, mind, emotions, and spirit.
In that state, we can best hear the the Anahata Nada, the unstruck sound behind the sound, the very Sound of the Self. **OM SHANTI-SHANTI-SHANTI**

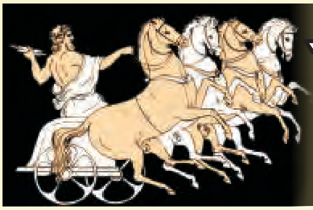

वेदों में इक्ष्वाकुवंश और राम कथा का उल्लेख

वेद मंत्रों का अर्थ करते समय प्राचीन काल से ही अनेक विद्वान् इन मंत्रों में ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख होना मानते रहे हैं। यास्क ने वेदमंत्रों के अर्थ को स्पष्ट और निर्भ्रान्त रूप में समझने के लिए निरुक्त की रचना की थी। आधुनिक युग में महर्षि दयानंद ने अपने भाष्यों में इसका आश्रय ग्रहण कर वेदमंत्रों के निर्भ्रान्त अर्थ समझने का प्रयास किया है। फिर भी वेदमंत्रों के भ्रान्तिपूर्ण अर्थ करने वाले व्यक्ति आज भी ऐसे अर्थ करते जा रहे हैं।

कुछ दिनों पूर्व मेरे पास दो साहित्यसेवी विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें भेजी गईं थीं। उनमें से एक में डॉ. शेख मौला अली ने ऋग्वेद (१०/३/३) में राम, सीता और रावण का, रामकथा में उल्लिखित घटनाओं का उल्लेख होना कहा है। मंत्र है-

भद्रोभद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्।।

इस मंत्र का वास्तविक अर्थ है-

'जिस प्रकार (जार) रात्रि का विनाश करता हुआ सूर्य अपनी (स्वसा)= भगिनी जैसी तमहर्त्री उषा के (पश्चात् अभिएति) पीछे आता है, वह स्वयं (भद्र) सुखदायी बनकर (भद्रया सचमान) प्रजा को सुख देने वाली बुद्धि या नीति से युक्त होकर (आगात) प्राप्त हो। उसी प्रकार (जार) शत्रु और दुष्टों का विनाशक होकर (स्वसारं) स्वयं आगत प्रजा के (पश्चात् अभिएति) पीछे तदनुकूल रहकर वश में करे। वह अग्नि के समान पुरुष (सु प्रकेत=) ज्ञानवान (द्युमित्र) किरणों के तुल्य विद्वानों सहित (वितिष्ठन) विविध कर्म करता हुआ (उशद्भिः) उज्जवल कमनीय (वर्णै) विद्वानों सहित (रामम् अभि अस्थात्) अंधकार जैसे शत्रु पर धावा करे।

डॉ. शेख मौला अली ने स्वलिखित शोध-ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण-रामचरित मानस एवं रामायण कल्पवृक्षमु का तुलनात्मक अध्ययन' में उपयुक्त मंत्र का अध्ययन करते हुए अर्थ किया है-

(भद्र) राम और (भद्रया) सीता के द्वारा (सचमान) सेवित होते हुए (आगात्) तपोवन में आये। राम और लक्ष्मण के पीछे (जार) रा (जार) रावण छिपकर सीता के पास आया और उसका हरण कर लिया। रावण के मारे जाने पर तेजस्वी अग्निदेवता राम की पत्नी सीता के साथ राम के सम्मुख आ गये और असली सीता को उन्हें सौंप दिया।

डॉ. शेख मौला अली ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र १०/६३/१४

प्र तद्दु:शीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु।
ये युक्त्वाय पंच शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम्।।

करते हुए- दशरथी राम के लिए अन्य बलशाली दुःशीम पृथवान और वेन के समान स्तुति करने का भाव व्यक्त किया है। वे (ऋग्वेद मंत्र- १/१२६/४)

चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणा: सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति।
मदच्युत: कृशनावतो अत्यान्कक्षीवन्त उदमृक्षन्त पज्रा:।।

में प्रथम अर्धांश का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'दशरथ के लाल और भूरे रंग के चालीस घोड़े एक हजार घोडों के दल का नेतृत्व करते हैं।' उत्तरांश को उन्होंने छुआ तक नहीं है।

इस मंत्र का स्पष्ट और निर्भ्रान्त अर्थ है-

'जिन दशरथों से युक्त सेनापति के चालीस लाल रंग के घोडे श्रेणी या पंक्ति को पहुँचाने को एक साथ मार्गों में जाते हैं और जिनके छने हुए वीर मद चुआते हुए लडते हैं- वे सुवर्ण आदि निर्मित गहने धारण किये हुए जिन मार्गों पर रमते हुए पहुँचते हैं। उन घोडों, रथों आदि को उत्कर्षता से सहते हैं।

'भाव यह है कि 'जिन के चार घोडों से युक्त रथ दशों दिशाओं में सहस्रों अश्ववारों, लाखों पैदल चलने वाले अत्यधिक कोश, धन और पूर्ण विद्या, विनय, नम्रता आदि गुणों से ही चक्रवर्ती राजा राज करते थे या करते हैं।'

डॉ. शेख मौला अली ने राम कथा के दशरथ, राम, सीता और लक्ष्मण के उल्लेख ही नहीं उनके वंश 'इक्ष्वाकु' का भी वेदों में होना कहा है। उन्होंने ऋग्वेद १०/६०/४ और अथर्ववेद ३६/१६/६ में आये 'इक्ष्वाकु' शब्द को राम और दशरथ के कुल से सम्बन्धित होना माना है। ये मंत्रांश हैं-

'यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान्मराय्येधते। (ऋ. १०/६०/४)

और... त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं। (अथर्व. १६/३६/६)

डॉ. शेख मौला अली ने दो अन्य पुस्तकों में रामायण के अन्य सभी पात्रों का सुन्दर वर्णन किया है- तदर्थ वे धन्यवाद के पात्र हैं। दूसरे प्राप्त ग्रन्थ (पुस्तक) के लेखक हैं 'भानुदत्त त्रिपाठी' 'मधुरेश'।

उन्होंने ओम् और राम, दोनों शब्दों में वर्ण-विच्छेद और सन्धि-विग्रह के आधार पर दोनों को एक दूसरे का पर्याय सिद्ध किया है। यथा-

राम=ऊँ, रअम= ओं, अर्म= ओम, अःम=अःम

ओम= अरम, ओं= र अ म, ऊँ= राम

भाषा वैज्ञानिकों के लिए यह निर्वचन विचारणीय है। वे इस पर विचार कर अपने मन्तव्य प्रकट करें।

- १०१, भट्टियानी चौहट्टा
मामा जी कि हवेली के सामने, उदयपुर- ३१३००१

वैदिक वाङ्मय और विज्ञान

गतांक से आगे ....

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

जिस शोधकार्य में मैं संलग्न हूँ उसकी रूपरेखा जानकारी हेतु देता रहा हूँ। मुझे अनेक स्नेही महानुभावों का सहयोग प्राप्त हो रहा है पर इस सहयोग का विस्तार कितना आवश्यक है यह सुधी आर्यजनों की सोच का विषय है। 'इण्डियन सायंस कांग्रेस' में भारतीय विज्ञान पर किये गये दुःखद विवाद से पलवल (हरियाणा) निवासी श्यामसिंह जी आर्य इतने विचलित हुए कि उन्होंने मुझे एक उलाहना भरा पत्र ही लिख दिया कि मैं इस बहस पर समर्थ होते हुए भी कोई लेख लिखने का अवकाश न पा सका। मैं श्यामसिंह जी का धन्यवाद करता हूँ कि वे मुझसे ऐसी अपेक्षा करते हैं। मेरे सभी दानी महानुभाव, कार्यकर्त्ता आदि बहुत आशाएँ कर रहे हैं। हमारे प्रधान संरक्षक पूज्य स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती (उत्तरकाशी) जब गद्‌गद् होकर मुझे कहते हैं कि 'आप ऋषि का कार्य कर रहे हैं।' आर्य जगत् के एक प्रख्यात् दानवीर व हमारे न्यासी मान्य सेठ दीनदयाल जी गुप्त जब स्वयं ही समय-समय पर दूरभाष पर मेरी आवश्यकताएँ पूछते रहते हैं, तो फरीदाबाद की लगभग ८० वर्षीया मान्या माता प्रकाश देवी जी यह कहती हैं कि मैं आपका कार्य देखने के लिए जीवित रहूँ, यही ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ तो मैं इन सभी सहयोगी आर्यों की श्रद्धा से स्वयं को दबा अनुभव करता हूँ। मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिये जहाँ बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात है, वहाँ यह मेरे लिये गुरुतर वा गुरुतम भार भी है, जिसे उठाना मेरा नैतिक दायित्व है।

आर्य दानदाता महानुभावों की सेवा में निवेदन करना चाहता हूँ कि मैंने तो स्वयं ही अपने आपको समय सीमा में बाँध दिया है। वह समय सीमा आप सबको ज्ञात ही है। अब ६ वर्ष से भी कम शेष रह गया है।

चैत्र कृष्णा त्रयोदशी २०७१ (१८.०३.२०१५) को मेरे ऐतरेय ब्राह्मण-वैज्ञानिक व्याख्यान (फाइनल) के २५ अध्याय ईश्वरकृपा से बड़े आनन्द और सफलता के साथ पूर्ण हो चुके हैं। इनमें मुझे लगभग २२ माह लगे हैं अभी १५ अध्याय शेष हैं। पृष्ठ संख्या की दृष्टि से इस ग्रन्थ का दो तिहाई भाग पूर्ण हो चुका है। इस प्रकार आशा है कि अनुकूलता रही तो एक वर्ष में यह वैज्ञानिक व्याख्यान पूर्ण हो जायेगा। मैं अब तक लगभग २००० पृष्ठ लिख चुका हूँ। आशा है अभी १००० पृष्ठ और होंगे। इसके पश्चात् उसे कम से कम दो बार पढ़कर लगभग ३०० वा ४०० पृष्ठ की व्यापक भूमिका (परिभाषिक एवं परिशिष्ट सहित) लिखनी होगी। यह भूमिका ही सम्पूर्ण ग्रन्थ को समझने के लिए एक कुंजी होगी। इसका सहारा लेकर ही कोई अति प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ही मेरे इस ग्रन्थ से अनेक विज्ञानों को प्रकाशित करने में समर्थ होगा। कोई संस्कृतज्ञ अथवा वर्तमान स्तर का वैदिक विद्वान् यदि तीव्र वैज्ञानिक बुद्धि से भी युक्त हो तो वह ब्राह्मण ग्रन्थों और वेदों को समझने के लिए एक ऐसी अद्‌भुत् और नवीन परम्परा का बोध कर सकेगा, जिसके आधार पर पाँच हजार वर्षों से लुप्त विज्ञान पुनः प्रकाशित हो सकेगा। इस भूमिका लेखन और व्याख्यान पठन में भी लगभग १ वर्ष तो लग ही जायेगा। इस प्रकार आगामी २ वर्ष तक मैं सभी आर्यों से आग्रह करता हूँ कि वे किसी के भी द्वारा वैदिक वा भारतीय संस्कृति पर प्रहार होते देखकर भी मुझसे किसी भी सहायता की अपेक्षा ना करें। मैं अपने कार्य में बहुत व्यस्त रहता हूँ। यह लेख भी अनिच्छापूर्वक आपको धैर्य बँधाने के लिए लिखना पड़ा है। मेरे पास वर्तमान विज्ञान के जो नवीन-नवीन शोध-समाचार आ रहे हैं और जिनके भविष्य में प्रकाश में आने की मुझे सम्भावना है, उनसे मैं किसी भी प्रकार से भयभीत, विचलित अथवा आशंकित नहीं हूँ बल्कि मैं और अधिक उत्साहित हूँ। मैं देख रहा हूँ कि कई आविष्कार जो अत्यन्त उच्च स्तर के एवं अभूतपूर्व हैं तथा जिन्हें दुनिया में अभी-अभी जाना गया है, उन्हें मैं अपने ऐतरेय व्याख्यान में लिख चुका हूँ। इस लेख में उनका वर्णन न तो सम्भव है और न आवश्यक है। इस पर हमारे कुछ हितैषी चिन्तित हो सकते हैं कि जब मैं २-३ वर्ष बाद उन बिन्दुओं को किसी के समक्ष प्रस्तुत करूँगा तो वैज्ञानिक वा प्रबुद्धजन यही कहेंगे कि यह तो हम जान ही चुके हैं। इस बात से भी आर्यजनों को विचलित नहीं होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि मेरा ऐतरेय ब्राह्मण व्याख्यान सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध रूप से एक ऐसा विस्तृत विज्ञान प्रस्तुत करेगा, जैसा इस समय सम्भवतः कहीं भी भूतल पर नहीं होगा। मेरी वैदिक शोधकर्त्ताओं और वर्त्तमान वैज्ञानिकों दोनों से ही पृथक् एक ऐसी शैली है, जिसके आधार पर ही मैं वेद को ईश्वरीय ज्ञान और सर्वविज्ञानमय सिद्ध करते हुए महर्षि ब्रह्मा से लेकर दयानन्द पर्यन्त ऋषियों की अद्‌भुत् वैज्ञानिकता को संसार के समक्ष प्रस्तुत करके आर्य वा हिन्दु समाज के साथ-साथ भारतवर्ष का मस्तक विश्व में ऊँचा कर सकूँगा। मेरे शोध का

उद्देश्य आर्ष ग्रन्थों में कमियाँ खोजना नहीं है बल्कि उनके गौरव को संसार में प्रतिष्ठित करना है। मैं आर्ष ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण तो नहीं मानता हूँ परन्तु मैं उनमें कमियाँ खोजूँ, यह भी मेरा सामर्थ्य वा उद्देश्य नहीं है। अब तक के २५ अध्याय के व्याख्यान में जिनमें अन्य भाष्यकारों को पशुबलि, हिंसा, मांसाहार, अश्लीलता व मूर्खता जैसी अनेक बातें दिखाई दी हैं, तो कोई उन्हें दुष्टजनों का प्रक्षेप बताकर पल्ला झाड़ लेते हैं। मुझे यह कहने में हर्ष हो रहा है कि मुझे इन २५ अध्यायों में एक कण्डिका तो क्या एक पंक्ति वा एक अक्षर भी न तो प्रक्षिप्त प्रतीत हुआ है और न ही निरर्थक बल्कि मैंने उन प्रसंगों में सृष्टि विद्या के अनेक गूढ़ और अज्ञात रहस्यों को देखा और उद्घाटित किया है। इसके कारण मेरा आत्मविश्वास निरन्तर उच्चता प्राप्त कर रहा है। यह बात मैं नहीं जानता कि मैं कैसे वैज्ञानिक मंचों पर जाकर अपनी बात रखूँगा, कौन मुझे वहाँ तक ले जायेगा, भारत सरकार का इसमें क्या सहयोग रहेगा, कौन सा साधन इस कार्य के लिए सेतु बनेगा?इन सब प्रश्नों को मैं ईश्वराधीन ही छोड़ता हूँ क्योंकि सभी प्रश्नों का उत्तर केवल ईश्वर और समय के पास ही हो सकता है। मैं अपने उच्च आदर्श रूप महामानव, विश्वपुरुष, आत्मा की उच्चता की परिसीमा रूप, महत्तम योगी भगवान् श्री कृष्ण जी महाराज के-'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' पर पूर्ण श्रद्धा रखते हुए पूर्ण निष्ठा व सर्वथा निष्काम भावना से अपने इस कार्य में लगा हूँ। ईश्वर व ऋषियों पर मुझे पूर्ण विश्वास है। मैंने अपने जीवन में सत्य का पूर्ण निष्ठा से पालन किया है, वह सत्यनिष्ठा ही मेरे संकल्प व आपके आस्था और विश्वास को अवश्य सत्य सिद्ध करेगी। हाँ, इतना अवश्य है कि मैं अपने लक्ष्य के लिए कभी भी असत्य का आश्रय कदापि नहीं लूँगा क्योंकि मैं महान् सत्य प्रतिज्ञ, वेदवेदांगतत्वज्ञ मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम तथा सत्य के प्रबल पोषक अपने परोक्ष गुरु महान् वेदवेत्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्रों की छाया में ही अब तक जीता रहा हूँ। मेरा यह भी दृढ़ मत है कि बिना सत्य के पालन के ईशकृपा प्राप्त नहीं होती और ईशकृपा के बिना केवल प्रतिभा तथा संसाधनों के बल पर कोई भी ईश्वरीय ज्ञान को उद्घाटित करने में समर्थ नहीं हो सकता। धन सम्पत्ति तो मिथ्यावादियों के पास भी हो सकती है परन्तु सत्य विज्ञान कदापि नहीं हो सकता। इसलिए मैं आपसे पुनः निवेदन करता हूँ कि गुप्त विज्ञान को खोजने के लिए मुझे मिला यह समय बहुत अल्प है, आप अधीर न हों। प्रचलित वैज्ञानिक परम्परा में जीने वाले तथा हजारों-लाखों सहयोगियों व सभी वांछित संसाधनों से युक्त महान् वैज्ञानिक भी एक-२ शोध कार्य में पूरा जीवन खपा देते हैं, तब मैं कहाँ से जादू की छड़ी लाकर वैदिक विज्ञान की लुप्त परम्परा को इतना शीघ्र खोजकर संसार को चमत्कृत कर दूँ? मेरे निर्धारित समय तक तो कम से कम शान्ति व धैर्य से रहें। मैं अपने स्वास्थ्य से ऊपर उठकर भारी पुरुषार्थ कर रहा हूँ। सितम्बर १९९६ में विषपान की घटना के पश्चात् मैं कभी भी अपने शरीर को पूर्ण स्वस्थ अनुभव नहीं कर पाया हूँ। मैंने बहुत संकट सहे हैं परन्तु फिर भी विश्राम नहीं लिया। स्वास्थ्य का ध्यान, संयम, व्यायाम, प्राणायाम अवश्य यन्त्रवत् व्यवस्थित रहता है और इसी से शरीर काम भी कर रहा है। वैसे ईशकृपा से मैं स्वयमेव संयमादि से विष प्रभाव से जीवन को किसी भी गम्भीर रोग से बचाने में समर्थ रहा हूँ। कृपया आप मुझे शीघ्रता के भार से और न दबाएँ। मुझे स्वयं शीघ्रता है परन्तु यह कार्य शीघ्रता से होने वाला नहीं है। इस कारण आप भी ईश्वर पर विश्वास करके अपना सहयोग व विश्वास बनाये रखें। ईश्वर हम सबको ऋषि दयानन्द के स्वप्न साकार करके वेद व भारत को विश्व प्रतिष्ठित करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान शोध संस्थान)
दूरभाष-०९४१४१८२१७३, ०९८२९१४८४००

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

तिल

तिल के गुण और प्रकार

आयुर्वेद में तिल को तीव्र असरकारक औषधि के रूप में जाना जाता है। काले और सफेद तिल के अतिरिक्त लाल तिल भी होता है। सभी के अलग-अलग गुणधर्म हैं। यदि पौष्टिकता की बात करें तो काले तिल शेष दोनों से अधिक लाभकारी हैं। सफेद तिल की पौष्टिकता काले तिल से कम होती है जबकि लाल तिल निम्न श्रेणी का तिल माना जाता है। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि तिल में चार रस होते हैं। इसमें गर्म, कसैला, मीठा और चरपरा स्वाद भी पाया जाता है। तिल हजम करने के लिहाज से भारी होता है। खाने में स्वादिष्ट और कफनाशक माना जाता है। यह बालों के लिए लाभप्रद माना गया है। दाँतों की समस्या दूर करने के साथ ही यह श्वास सम्बन्धी रोगों में भी लाभदायक है। स्तनपान कराने वाली माताओं में दूध की वृद्धि करता है। पेट की जलन कम करता है तथा बुद्धि को बढ़ाता है। बार-बार पेशाब करने की समस्या पर नियंत्रण पाने के लिए तिल का कोई सानी नहीं है। चूँकि यह स्वभाव से गर्म होता है इसलिए इसे सर्दियों में मिठाई के रूप में खाया जाता है। गजक, रेवड़ियाँ और लड्डू शीत ऋतु में ऊष्मा प्रदान करते हैं।

तिल में निहित पौष्टिक तत्व

तिल में विटामिन ए और सी छोड़कर वे सभी आवश्यक पौष्टिक पदार्थ होते हैं जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक होते हैं। तिल विटामिन बी और आवश्यक फैटी एसिड्स से भरपूर है। इसमें मीथोनाइन और ट्रायप्टोफन नामक दो बहुत महत्त्वपूर्ण एमिनो एसिड्स होते हैं जो चना, मूँगफली, राजमा, चौला और सोयाबीन जैसे अधिकांश शाकाहारी खाद्य पदार्थों में नहीं होते। ट्रायोप्टोफन को शांति प्रदान करने वाला तत्व भी कहा जाता है जो गहरी नींद लाने में सक्षम है। यही त्वचा और बालों को भी स्वस्थ रखता है। मीथोनाइन लीवर को दुरुस्त रखता है और कोलेस्ट्रॉल को भी नियंत्रित रखता है। यह कब्ज भी नहीं होने देता।

तिलबीजों में उपस्थित पौष्टिक तत्व जैसे- कैल्शियम और आयरन त्वचा को कान्तिमय बनाए रखते हैं। तिल में न्यूनतम सैचुरेटेड फैट होते हैं इसलिए इससे बने खाद्य पदार्थ उच्च रक्तचाप को कम करने में मदद कर सकते हैं। सौ ग्राम सफेद तिल से १००० मिलीग्राम कैल्शियम प्राप्त होता है। काले और लाल तिल में लौह तत्वों की भरपूर मात्रा होती है जो रक्ताल्पता के इलाज में कारगर साबित होती है। तिल में उपस्थित लेसिथिन नामक रसायन कोलेस्ट्रॉल के बहाव को रक्त नलिकाओं में बनाए रखने में मददगार होता है। तिल के तेल में प्राकृतिक रूप में उपस्थित सिस्मोल एक ऐसा एंटी-ऑक्सीडेंट है जो इसे ऊँचे तापमान पर भी बहुत जल्दी खराब नहीं होने देता। आयुर्वेद चरक संहिता में इसे पकाने के लिए सबसे अच्छा तेल माना गया है।

तिल के कुछ घरेलू इलाज

✦ कब्ज दूर करने के लिये तिल को बारीक पीस लें एवं प्रतिदिन पचास ग्राम तिल के चूर्ण को गुड़, शक्कर या मिश्री के साथ मिलाकर फाँक लें।

✦ पाचन शक्ति बढ़ाने के लिये समान मात्रा में बादाम, मुनक्का, पीपल, नारियल की गिरी और मावा अच्छी तरह से मिला लें, फिर इस मिश्रण के बराबर तिल कूट पीसकर इसमें मिलाएँ, स्वादानुसार मिश्री मिलाएँ और सुबह-सुबह खाली पेट सेवन करें। इससे शरीर के बल, बुद्धि और स्फूर्ति में भी वृद्धि होती है।

✦ प्रतिदिन रात्रि में तिल को खूब चबाकर खाने से दाँत मजबूत होते हैं।

✦ तिल के लड्डू उन बच्चों को सुबह और शाम को जरूर खिलाना चाहिए जो रात में बिस्तर गीला कर देते हैं। तिल के नियमित सेवन करने से शरीर की कमजोरी दूर होती है और रोग प्रतिरोधक शक्ति में वृद्धि होती है।

✦ पायरिया और दाँत हिलने के कष्ट में तिल के तेल को मुँह में २०-२५ मिनट तक रखें, फिर इसी से गरारे करें। इससे दाँतों के दर्द में तत्काल राहत मिलती है। गर्म तिल के तेल में हींग मिलाकर भी यह प्रयोग किया जा सकता है।

✦ पानी में भिगोए हुए तिल को कढ़ाई में हल्का सा भून लें। इसे पानी या दूध के साथ मिक्सी में पीस लें। सादा या गुड़ मिलाकर पीने से रक्त की कमी दूर होती है।

✦ जोड़ों के दर्द के लिये एक चाय के चम्मच भर तिलबीजों को रातभर पानी के गिलास में भिगो दें। सुबह इसे पी लें। या हर सुबह एक चम्मच तिलबीजों को आधा चम्मच सूखे अदरक के चूर्ण के साथ मिलाकर गर्म दूध के साथ पी लें। इससे जोड़ों का दर्द जाता रहेगा।

✦ तिल गुड़ के लड्डू खाने से मासिकधर्म से संबंधित कष्टों तथा दर्द में आराम मिलता है।

– डॉ. शशांक वझ

(साभार- Abhivyakti.org

समाचार

दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। सभी आयु वर्ग की बालिकाओं द्वारा स्वागत गीत, समूह नृत्य, दहेज कुप्रथा पर लघु नाटिका आदि प्रस्तुतियाँ दी गईं। मुख्य अतिथि श्रीमती वन्दना अग्रवाल (निदेशिका नारायण सेवा संस्थान), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् पंडित हरीश जी एवं श्रीमती जया जी थे। इस अवसर पर छात्राओं को पारितोषिक वितरण किए गये। प्रो. डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया।

विद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन मंत्री श्री कृष्ण कुमार सोनी ने प्रस्तुत किया। विद्यालय की मानद निदेशक श्रीमती पुष्पा सिंधी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

– कृष्ण कुमार सोनी, मंत्री

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित

पाणिनि कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या, आर्यजगत् की प्रसिद्ध वेद, व्याकरण, दर्शन, कर्मकाण्ड आदि शास्त्रों की परमविदुषी, संस्कृत एवं हिन्दी की प्रसिद्ध सिद्धान्त लेखिका, गुरुकुल संचालिका, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा को उ.प्र. संस्कृत अकादमी ने उनकी वेद, व्याकरण, संस्कृत के प्रति की गई सेवाओं के लिए विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया है। पुरस्कार में शॉल, ताम्र सम्मान पत्र एवं ५१०००/- की धन राशि प्रदान की गई। यह पुरस्कार विधानसभा के सभाध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय के सान्निध्य में गत २० मार्च २०१५ को दिया गया।

– अरुणा नागर, मंत्री, आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज

वेद पारायण यज्ञों का रजत जयन्ती समारोह नैनोरा की धरती बनी यज्ञमय

निर्देशन– आचार्य जयेन्द्र, डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती, डॉ. पवित्रा वेदालंकार।

आशीर्वाद– पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, आर्ष गुरुकुल, गौतम नगर, दिल्ली, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सांसद, पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं अनेक संन्यासी महानुभाव।

प्रेरक उद्बोधन– आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ.वेदपाल, ठाकुर विक्रमसिंह, श्री अरुण अबरोल, महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई, श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, श्री सत्यव्रत सामवेदी, पूर्व प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अनेक विद्वद्जन व आर्य प्रमुख।

भजनोपदेशक– श्री कैलाश कर्मठ, श्री नरेशदत्त जी के नेतृत्व में अनेक युवा व वरिष्ठ भजनोपदेशक।

४६ डिग्री सेल्सियस तापमान व लू के थपेड़ों का आर्य नर-नारियों पर कोई असर नहीं। सर्वत्र केवल उत्साह का दर्शन।

शोभायात्रा– पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सांसद, सीकर के नेतृत्व में ग्राम नैनोरा की गलियाँ ओ३म् ध्वज से पटीं।

अद्भुत क्षण– जब जीते जी डॉ. सोमदेव शास्त्री ने अपने उत्तरदायित्व के स्थानान्तरणस्वरूप अपने सुपुत्र होनहार विद्वान् प्रणव शास्त्री को अपनी पगड़ी उतारकर पहनाई तो इस अनूठे अवसर पर पांडाल में उपस्थित कोई आँख न थी जो नम न हुई हो। यह सर्वोच्च प्रेरणादायक क्षण था जिसे उपस्थित नर-नारियों ने अपने अन्तस में सदैव के लिए समेट लिया।

सर्वत्र चर्चा– केवल डॉ.सोमदेव शास्त्री की। उनके पुरुषार्थ की, उनकी श्रद्धा की और अपने उपदेशक जीवन में प्राप्त लगभग १५ लाख रुपये की दक्षिणा इन पवित्र यज्ञ आयोजनों में होम देने की।

उदारता– ठाकुर विक्रम सिंह जी द्वारा, उपस्थित सभी संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों, पुरोहितों को स्वतःस्फूर्त मन से दक्षिणा देने की।

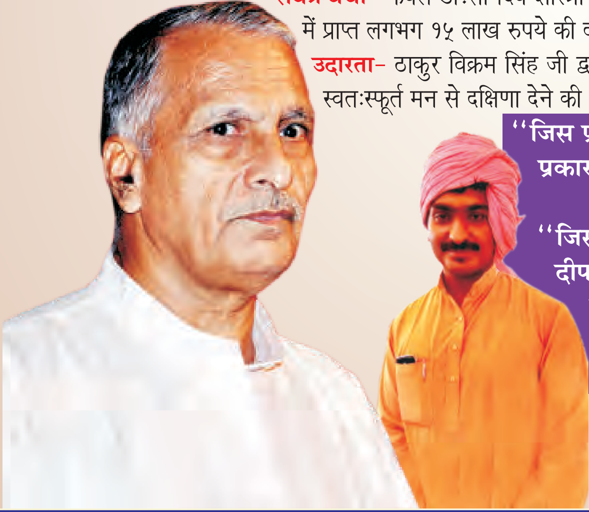

''जिस प्रकार हिमगिरि शिखरों में एवरेस्ट का प्रमुख स्थान है, उसी प्रकार वैदिक विद्वानों में डॉ.सोमदेव शास्त्री का स्थान है।''

-स्वामी आर्यवेश

''जिस प्रकार मिट्टी रोंदी जाकर, कुम्हार के कुशल हाथों से दीपकरूप में ढलकर प्रकाश फैलाने में कारक बनती है उसी प्रकार डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने अपने जीवन में अनेक विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहकर सदैव सत्यरूपी प्रकाश को फैलाने का कार्य किया है।'' **-आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय**

कामना– डॉ.सोमदेव शास्त्री पूर्णतः निरोग रहकर सत्य धर्म का अहर्निश प्रचार करते हुए मानवता की सेवा करते रहें तथा चि. प्रणव अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार निभा सके, ऐसी प्रभु कृपा करें।

हलचल

आर्यसमाज मन्दिर, भटार रोड़, सूरत के तत्वावधान में १३ जनवरी से १८ जनवरी १५ तक यज्ञ-योग-प्रचार कार्यक्रम चलता रहा। आचार्य उमाशंकर उपाध्याय जी के नेतृत्व में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य का सम्मान करते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान व गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल।

कात्यायनमुनि विद्यापीठ का शुभारम्भ

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम (आनन्दधाम आश्रम), गढ़ी, उधमपुर (जम्मू काश्मीर) में 'कात्यायनमुनि विद्यापीठ' की स्थापना करने का निर्णय लिया गया। आचार्य सन्दीप आर्य जी ने अध्यापन कार्य निःशुल्क कराना स्वीकार किया। अध्ययन के इच्छुक एवं दानदाता महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें। - भारतभूषण आनन्द, प्रधान

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में दिनांक १० मई २०१५ रविवार को अपना घर शालीमार, अलवर में आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं त्रेहान होम डवलपर्स के सामूहिक प्रयास से १०१ कुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि आदरणीय लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी थे। यज्ञ के ब्रह्मा पं. हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य, नई दिल्ली थे। लोकायुक्त श्री कोठारी जी ने अपने सम्बोधन में यज्ञ के लाभों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि औषधि से युक्त यज्ञ सामग्री से यज्ञ करने पर वातावरण शुद्ध होता है। यज्ञ से सभी की धार्मिक भावनाएँ जागृत होती हैं। साथ ही आपने धर्म प्रेमी बन्धुओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों तथा वैदिक संस्कृति को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती कमला शर्मा ने मंच संचालन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

विशेष सूचना

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के अन्तर्गत विशाल राष्ट्रीय शिविर दिनांक १८ जून २०१५ से २८ जून २०१५ तक एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग वेस्ट, दिल्ली में लगाया जा रहा है।
इस शिविर को दो भागों में विभाजित किया जाएगा-
१. शिक्षिका प्रशिक्षण शिविर।
२. सामान्य शिक्षण शिविर।
जिन वीरांगनाओं ने चार शिविर किये हैं व उनकी आयु १५ वर्ष से अधिक है उन्हें पूर्ण शिक्षिका का प्रशिक्षण दिया जायेगा, ताकि वे भविष्य में शिक्षिकाओं की पूर्ति कर सकें।
प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधियों से विशेष निवेदन है कि वह अपने-अपने राज्यों से कन्याएँ भेजकर प्रशिक्षण प्राप्त करायें ताकि वह भविष्य में अपने स्थानों पर वीरांगना दल की शाखाएँ लगाने व शिविर लगाने में समक्ष हो सकें। निवेदक- साध्वी डॉ. उत्तमायति

प्रतिस्वर

श्रीमान् जी अशोक जी आर्य, नमस्ते! मैं आपकी पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का पाठक हूँ। आपने सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने का एक जादुई तरीका इसके माध्यम से पाठकों को दिया है जिससे वे उसके नियमित पाठक बन सकें। इस पत्रिका में लेख तो सारगर्भित हैं ही साथ में 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली' जो चलाई गई मुझे अति पसन्द आई है। - अशोक सिंह, रोहतक गेट, भिवानी

माननीय श्री कमलेश कुमार शास्त्री (अहमदाबाद) के पूज्य पिता श्री छगनलाल गंगाराम पटेल का दिनांक ४ मई २०१५ को देहावसान हो गया। आपने अपने जीवन के ५०वें वर्ष में व्यवसायादि से निवृत्ति लेकर शेष ४०-४१ वर्ष के जीवन को वैदिक स्वाध्याय तथा नित्य यज्ञ कार्य में तथा धर्म-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में व्यतीत किया।
परमकृपालु परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवार उनके पदचिह्नों पर चलता हुआ पितृतर्पण के अपने उत्तरदायित्व को निभाता रहे, यही प्रार्थना है। - नारायण मित्तल, कोषाध्यक्ष (स. प्र. न्यास)

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह जी की पत्नी श्रीमती पुष्पा आर्या का निधन

श्रीमती पुष्पा आर्या अत्यन्त धार्मिक महिला थीं और अपने पति श्री रामसिंह जी के क्रिया-कलापों में सहभागी रहा करती थीं।
श्रीमती पुष्पा जी का अन्तिम संस्कार हजारों लोगों की उपस्थिति में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।
इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने भावपूर्ण उद्बोधन में जीवन-मृत्यु, सुख-दुःख की व्याख्या के साथ वेदादि शास्त्रों के उदाहरण देते हुए श्री रामसिंह जी को अल्प समय में हुए दोहरे आघात से त्राण दिलाने का प्रयास किया। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक संवेदना।

आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर के युवा मंत्री श्री कमलेश शर्मा के पिता श्री रघुनाथ प्रसाद जी का आकस्मिक निधन दिनांक २६ अप्रैल २०१५ को हो गया। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। इन दुःखद क्षणों में सत्यार्थ सौरभ परिवार एवं न्यास परिवार आपके साथ है। - ओ. पी. वर्मा, प्रधान

सुकन्या खाता खोलें

१. खाता किसी भी डाकघर में अविवाहित बालिका के नाम जन्म से लेकर १० वर्ष की उम्र तक खोला जा सकता है। खाते के लिए जन्म प्रमाण पत्र साथ में लगायें।
२. खाते पर ९.२ प्रतिशत की उच्च दर से वार्षिक ब्याज मिलेगा साथ में आयकर में छूट भी देय है।
३. खाता खोलने के वर्ष से लगातार १४ वर्ष तक राशि जमा करवायी जायेगी।
४. खाता खोलने की तारीख के २१ वर्ष बाद या वयस्क होने पर शादी के समय खाता बंद करवा सकते हैं।
- प्रचार अधीक्षक डाकघर, उदयपुर मण्डल, उदयपुर

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव जीवन यात्रा

"संन्यासाश्रम"

का चतुर्थ एवं अन्तिम पड़ाव संन्यासाश्रम है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव जीवन यात्रा का चतुर्थ एवं अन्तिम पड़ाव संन्यासाश्रम है।

संन्यास का अर्थ एवं वेदमूलकता

वानप्रस्थ आश्रम एक प्रकार से संन्यास को ग्रहण करने की तैयारी है। संन्यास पद का अर्थ है- त्याग देना। मनुष्य जब सांसारिक भोगों को, इच्छाओं और फलों को त्याग देता है तब वह संन्यासी होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती इस विषय में लिखते हैं-

'सम्यङ् न्यस्यन्त्यधर्माचरणानि येन वा सम्यङ् नित्यं सत्यकर्मस्वास्त उपविशति स्थिरीभवति येन स 'संन्यासः'। संन्यासो विद्यते यस्य स 'संन्यासी'।

(संस्कार विधिः, संन्यासप्रकरणम् पृष्ठ २३८)

अर्थात् जो मोहादि आवरण, पक्षपात छोड़ के विरक्त होकर सब पृथ्वी में परोपकारार्थ विचरे। संन्यास का अर्थ ही है- 'सं-न्यास', अर्थात् कन्धों पर पड़े बोझ को उतार कर फैंक देना। वेदों में 'संन्यास' शब्द नहीं आया है। पर वेद संहिताओं में 'यतयः' ब्राह्मणासः, विजानतः इत्यादि पदों से 'संन्यास' का विधान है। संन्यासी के सम्बन्ध में वेदों में कहा गया है- **'ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम्'** अर्थात्- शान्तिशील ब्रह्मवेत्ता संन्यासी, ब्रह्मज्ञान को विश्वव्यापी बनाने के लिए वेद का उच्चारण अथवा वेद की बात करते हैं। (ऋग्वेद ७/१०३/८)

'यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः। तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः'। (यजुः ४०/७)

अर्थात् जिस समय, सब भूतों पर आत्मा-परमात्मा का अधिष्ठान है, ऐसा ज्ञान होता है, तब उस विज्ञानी, समदर्शी संन्यासी को कैसा मोह, कैसा शोक।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है- **'सम्यङ् नित्यमास्ते यस्मिन यदा सम्यङ् न्यस्यन्ति दुःखानि कर्माणि येन सः संन्यास सप्रशस्तो विद्यतेयस्य स संन्यासी'** अर्थात् जो ब्रह्म उसी की आज्ञा में उपविष्ट अर्थात् स्थित और जिससे दुष्ट कर्मों का त्याग किया जाए, वह संन्यास और उत्तम स्वभाव जिसमें हो वह संन्यासी कहलाता है। इसमें सुकर्म का कर्त्ता और दुष्ट कर्मों का विनाश करने वाला संन्यासी कहलाता है।

संन्यास का प्रयोजन

पुत्रेषणा, लोकैषणा तथा वित्तैषणा से रहित होकर ब्रह्मोपासना और परोपकार के लिए अपने को समर्पित कर देने का नाम संन्यास है। यह संस्कार निष्काम कर्म का प्रतीक है। संन्यास में समस्त संकीर्ण भावनाऐं समाप्त हो जाती हैं जैसा कि कहा गया है-

**अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।**

(संस्कार महत्त्व- पं. मदन मोहन विद्यासागर)

संन्यास के लिए दो बातें आवश्यक हैं जिनके बिना संन्यास लेने वाले व्यक्ति को दुःख हो सकता है, वे हैं- वैराग्य और ज्ञान। मैत्रेयोपनिषद (२/१६) का कथन है कि- 'जब सब वस्तुओं के प्रति मन में वैराग्य हो जाये तभी संन्यास ले अन्यथा पतित होने का भय है।' नारद परिव्राजकोपनिषद् (३/१२) में भी ये ही भाव प्रकट किया गया है। महर्षि दयानंद ने भी संन्यास की चर्चा करते हुए लिखा है कि- 'संन्यास में दृढ़ वैराग्य और यथार्थ ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है।'

(सत्यार्थ प्रकाश- पंचम समुल्लास)

अन्य आश्रमों में विद्याग्रहण, गृहस्थ कृत्य तथा तपश्चर्या में लगे रहने के कारण सम्यक् आत्मवर्धन तथा कर्मवृद्धि में व्यक्ति विशेष उन्नति नहीं कर सकता। दूसरे संन्यासी निस्पृह तथा निष्काम होता है। अतः प्रत्येक बात को पक्षपात् छोड़कर कहता है। ऐसा अन्य आश्रमी करने में पूर्ण सक्षम नहीं हो सकता। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए संन्यासी का होना अनिवार्य है। "सत्यार्थ प्रकाश" में इस तथ्य का उल्लेख करते हुए महर्षि ने लिखा है कि 'जैसे शरीर में सिर की आवश्यकता है वैसे ही आश्रमों में संन्यासाश्रम की आवश्यकता है क्योंकि इसके बिना विद्या, धर्म कभी नहीं बढ़ सकता और दूसरे आश्रमों को विद्याग्रहण, गृहकृत्य और तपश्चर्या का सम्बन्ध होने से अवकाश बहुत कम मिलता है। पक्षपात छोड़कर वर्त्तना दूसरे आश्रमों में दुष्कर है।'

(सत्यार्थ प्रकाश- पंचम समुल्लास)

संन्यासी सर्वतोमुखी होकर जगत् का उपकार करता है। अतः समाज व राष्ट्र की उन्नति के लिये संन्यासी परम आवश्यक है। वस्तुतः संन्यासाश्रम मोक्ष साधना का आश्रम है। छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि- संन्यास को प्राप्त करके ही मनुष्य ब्रह्म में स्थित होता है।

अर्थात् संन्यासी ब्रह्मस्थ होकर मोक्ष को प्राप्त करता है।'

ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति (छान्दो. २.२३)

अतएव यह स्पष्ट है कि- आश्रम-व्यवस्था में संन्यासाश्रम

का मुख्य प्रयोजन है- संन्यासी द्वारा मानवमात्र का, ज्ञान से उपकार करते हुए मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य तक पहुँचना। सत्यार्थ प्रकाश के पंचम समुल्लास में महर्षि दयानन्द लिखते हैं- संन्यासियों का मुख्य कर्म यही है कि सब गृहस्थादि आश्रमों को सब प्रकार के व्यवहारों का सत्य निश्चय करा अधर्म व्यवहारों से छुड़ाकर संशयों का छेदन कर सत्य धर्मयुक्त व्यवहारों में प्रवृत कराया करे। लोक में प्रतिष्ठा वा लाभ धन से भोग वा मान्य पुत्रादि के मोह से अलग हो के संन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात-दिन मोक्ष के साधनों में तत्पर रहें।

(सत्यार्थ प्रकाश ५ समु. शतपथ १४/५/२/१)

महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त लिखने का सार यह है कि संन्यासी संसार के मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र का उपकार करते हुए स्वयं द्वारा मोक्ष प्राप्त करने में प्रयत्न शील रहते हैं यही संन्यासाश्रम का प्रयोजन है।

सम्पादक- अशोक आर्य

जय मानवता

कथा सरित

सितम्बर २०१० की बात है ३५ वर्षीय विष्णु श्रेष्ठ जो कि गोरखा रेजिमेन्ट में कार्य कर रहे थे, अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् अपने घर नेपाल वापस जाने के लिए गोरखपुर के लिए मौर्य एक्सप्रेस में सवार थे। बीच रास्ते में कोई पन्द्रह बीस डाकुओं ने रेल पर चितरंजन (पश्चिम बंगाल) स्टेशन के पास आक्रमण किया और यात्रियों से लूटपाट आरम्भ कर दी तथा मोबाइल, लेपटॉप, आभूषण तथा नगदी लूटते गए। जब ये डाकू श्रेष्ठ के पास पहुँचे तो श्रेष्ठ ने भी अपनी जेब से सारा सामान निकाल कर इनको देना चाहा। इसी बीच में उनके सामने की सीट पर एक १८ वर्ष की लड़की बैठी थी जिसे इन डाकुओं ने बलात्कार के उद्देश्य से उठा लिया। लड़की पहले से विष्णु श्रेष्ठ को नहीं जानती थी पर बातचीत में उसे इतना पता अवश्य लग गया था कि यह एक अवकाश प्राप्त सैन्य अधिकारी है। उसने बचाने की गुहार लगाई तो विष्णु श्रेष्ठ अपने को रोक नहीं सका। यद्यपि डाकुओं की संख्या बीस से भी कहीं ज्यादा थी उनमें से कुछ के पास घातक हथियार यहाँ तक पिस्तौलें भी थी परन्तु श्रेष्ठ ने इन सबकी परवाह नहीं कर अपनी खुखरी निकाल ली और डाकुओं पर टूट पड़ा। डाकुओं ने कल्पना भी नहीं की थी कि एक व्यक्ति इस प्रकार उन पर टूट पड़ेगा। इस लड़ाई का यह नतीजा हुआ कि तीन चार डाकू मर गए और आठ घायल हो गए बाकी के सारा सामान वहीं छोड़कर भाग गए और इस प्रकार अपनी जान हथेली पर रखकर श्रेष्ठ ने अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। जब उस लड़की के परिवार ने श्रेष्ठ को पुरस्कारस्वरूप बड़ी राशि देनी चाही तो उसने कहा कि मैंने केवल मनुष्य होने के नाते अपने कर्तव्य का पालन किया। ऐसी घटनाएँ वस्तुतः मनुष्यता में आज भी विश्वास को जागृत करती हैं।

दूसरी घटना- यह सत्य घटना ऑस्ट्रेलिया के एक रेलवे स्टेशन की है। सुबह के व्यस्ततापूर्ण समय में एक गाड़ी अभी-अभी स्टेशन पर आकर खड़ी हुई थी यात्री शीघ्रतापूर्वक गाड़ी पर चढ़ने लगे। रेल का ऑटोमेटिक दरवाजा कुछ ही देर में बंद हो

जाता है, इसलिए सभी को जल्दी थी। इसी जल्दबाजी में एक व्यक्ति फिसलकर प्लेटफार्म व गाड़ी के बीच की जगह में फँस गया। भीड़ वहाँ इकट्ठा हो गई और सभी लोग उसे निकालने में जुट गए परन्तु बाहर नहीं निकाल सके। जब कुछ भी नहीं हो पा रहा था तो किसी ने सलाह दी कि सारे लोग रेल के अन्दर प्लेटफार्म के दूसरी ओर खड़े हो जायें ताकि उनके वजन से रेल थोड़ी-सी उधर झुक जाए, जिससे उस व्यक्ति को निकाला जा सके। परन्तु इससे कुछ भी नहीं हुआ। इसी समय कुछ लोगों ने सोचा कि क्यों न रेल को प्लेटफार्म के दूसरी ओर धकेलने की कोशिश की जाए। मानवीय संगठन का अद्भुत नजारा देखने को मिला। एक साथ जब सैंकड़ों हाथों ने रेल को धक्का दिया तो रेल बहुत थोड़ी-सी दूसरी ओर झुकी पर इतना अपने आप में पर्याप्त था। उस व्यक्ति को बाहर निकाल लिया गया। ऐसे क्षणों में व्यक्ति की व्यक्ति के प्रति सदाशयता को देख मानवता में विश्वास बना रहता है।

साभार- Qura.com

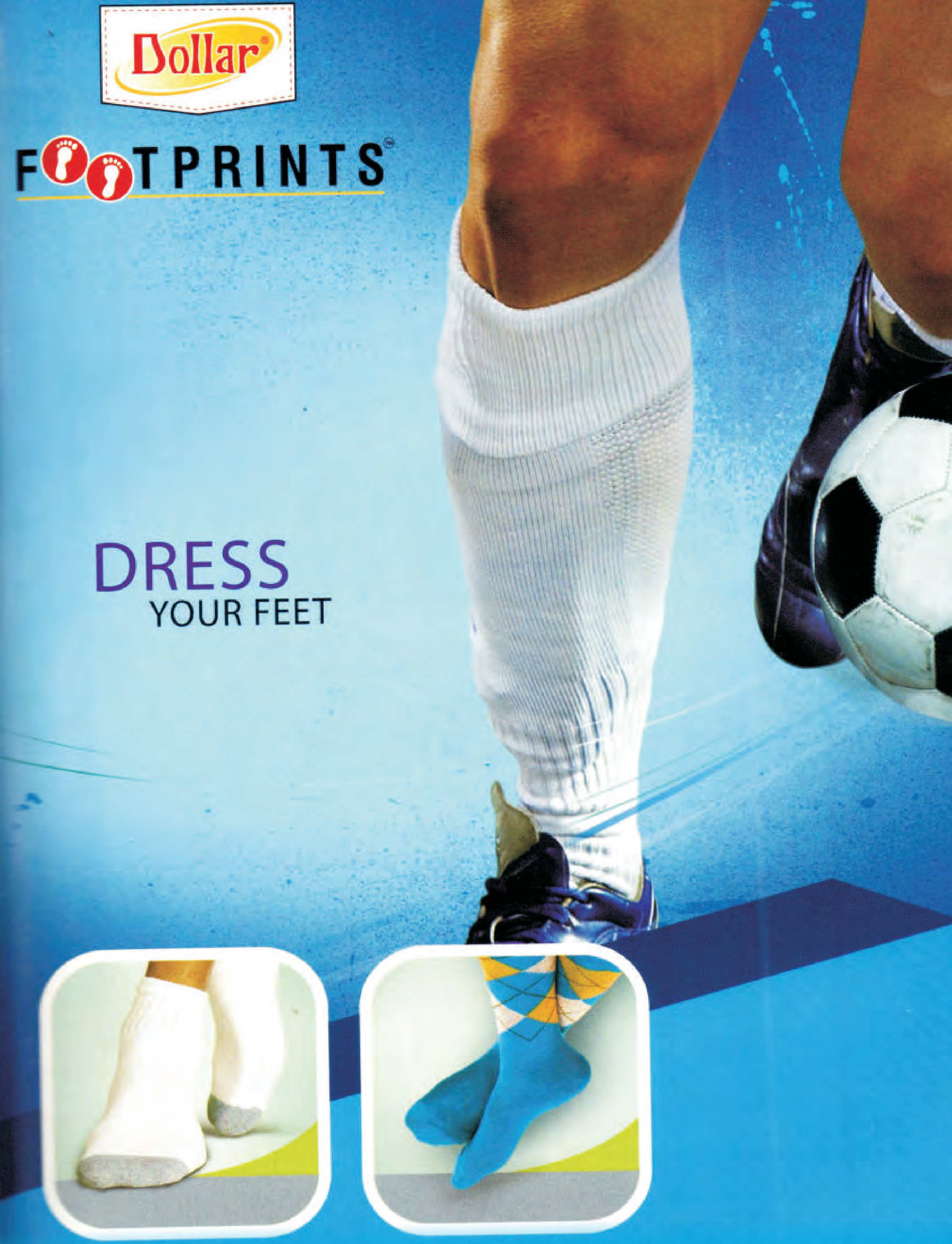
Dollar
FOOTPRINTS
DRESS
YOUR FEET

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

देव, विद्वान् और माता-पितादि की सेवा में प्रमाद मत कर। जैसे विद्वान् का सत्कार करे, उसी प्रकार माता-पिता, आचार्य और अतिथि की सेवा सदा किया कर।

– सत्यार्थप्रकाश– पृ. ५२

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य